मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

हज़रत इब्राहीम की क़ुर्बानी

''हज़रत इब्राहीम की क़ुर्बानी क्या थी?यह केवल ख़ून व गोश्त की क़ुर्बानी न थी बल्कि रूह व दिल की क़ुर्बानी थी। यह अल्लाह की राह में अल्लाह के सिवा किसी ग़ैर की मुहब्बत की क़ुर्बानी थी। यह अपनी सबसे प्यारी चीज़ को अल्लाह के सामने पेश कर देने की नज़र थी। यह अल्लाह की इताअत, उपासना तथा सम्पूर्ण स्वीकृति तथा सब्र व शुक्र का इम्तिहान था जिसको पूरा किये बग़ैर दुनिया की पेशवाई और आख़िरत की नेकी नहीं मिल सकती।''

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0)

AUG 18

₹10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

शौक़-ए-आख़िरत

ज़मीन व आसमान में मोमिन की महबूबियत

''हज़रत अनस सहाबी से रिवायत है कि नबी करीम स०अ० ने फ़रमाया कि हर इन्सान के लिये आसमान में दो दरवाज़े हैं। एक वह जिससे इसके आमाल ऊपर चढ़ते हैं। दूसरा वह जिससे इसका रिज़्क़ नीचे उतरता है। जब बन्दा–ए–मोमिन मरता है तो वह इस पर रोते हैं। बन्दा–ए–मोमिन दुनिया में किसी अदना से अदना मरतबा व मंज़िलत का भी हो बहरहाल अपने परवरदिगार के यहां नाक़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं रहता। और कस्मपुर्सी में नहीं पड़ा रहता। परवरदिगार का ताल्लुक़ अपने बन्दे से उसकी ज़िन्दगी भर हमा वक़्त क़ायम रहता है। एक ताल्लुक़ उसके नेक आमाल को आसमान की बुलन्दियों पर पहुचांने वाला और दूसरा उसके रिज़्क़ मक़सूम को ज़मीन तक लाने वाला और मोमिन की वफ़ात के वक़्त उन दोनों ताल्लुक़ात वाले दरवाज़े उस पर ग़म व मातम करते हैं। अल्लाह–अल्लाह किस दर्जे एहतिमाम व इकराम हर मोमिन के लिये आलमे मलकूत में भी रहता है।

अता खुरासानी से रिवायत है कि जो शख़्स ज़मीन के किसी टुकड़े पर भी सज्दा करता है वह टुकड़ा क़यामत के दिन उसके हक़ में गवाही देगा। और वह टुकड़ा उसकी मौत के दिन उस पर रोता है।

अल्लाह तआला का ताल्लुक़ अपने हर बन्दे मोमिन से कितना ज़िन्दा और जानदार होता है आज सज्दा कीजिए और कल देख लीजिए कि ज़मीन का हर–हर चप्पा जिस पर आपने कभी भी अल्लाह के लिये सर टेका है आपके हक़ में गवाह बनकर आयेगा। और इस दुनिया में भी जिस वक़्त आपसे रुकू व सुजूद की ताक़त हमेशा के लिये सल्ब कर ली जाती है वह बेहिस टुकड़ा ज़मीन का नहीं रहता बल्कि सज्दा गुज़ार मोमिन के ग़म में रोता है। क्या उज्ब कि हर सज्दा–ए–ज़मीन सज्दे को नई ज़िन्दगी बख़्शता हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० सहाबी से रिवायत है कि ज़मीन मोमिन के मरने पर चालिस दिन तक रोती रहती है।

बन्द–ए–मोमिन पर इकराम व नवाज़िश की कोई हुदूद व इन्तिहा है। ज़मीन बज़ाहिर हर तरह मुर्दा व बेजान ख़ुश्क व जामिद, गंग व बेहिस भी मोमिन की मौत पर रंज व ग़म महसूस करती है और चालिस दिन तक इस पर रोती रहती है।

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर स०अ० ने फ़रमाया कि जो मौत से पहले आख़िरी कलाम फ़रमाया वह यह था कि नमाज़ की पाबन्दी करो, न माज़ का पूरा एहतिमाम करो और अपने गुलामों, ज़ेरेदस्तों के बारे में ख़ुदा से डरो।

इस हदीस से मालूम हुआ कि इस दुनिया से और उम्मत से हमेशा के लिये रुख़्सत होते हुए रसूलुल्लाह स०अ० ने अपनी उम्मत को ख़ास तौर पर दो बातों की ताकीदी नसीहत फ़रमायी थी एक यह कि नमाज़ का पूरा एहतिमाम किया जाए। इसमें ग़फ़लत और कोताही न हो। यह सबसे अहम फ़रीज़ा और बन्दों पर अल्लाह का सबसे बड़ा हक़ है। दूसरी यह कि गुलामों बांदियों के साथ बर्ताव में उस ख़ुदावन्दे जुलजलाल से डरा जाए जिसकी अदालत में हर एक की पेशी होगी। और हर मज़लूम को ज़ालिम से बदला दिलवाया जायेगा। गुलामों, ज़ेरेदस्तों के लिये यह बात कितने शर्फ़ की है कि रसूले रहमत स०अ० ने इस दुनिया से जाते वक़्त सबसे आख़िरी वसीयत अल्लाह तआला के हक़ की अदायगी और उनके साथ हुस्ने सुलूक की फ़रमायी। और इस हदीस के मुताबिक़ सबसे आख़िरी लफ़्ज़ जो आप स०अ० की ज़बान से अदा हुआ ''वत्तकुल्लाहा फ़ी मा मलकत ईमानकुम'' था।

इब्ने उमर सहाबी से रिवायत है कि नबी करीम स०अ० ने फ़रमाया कि मोमिन जब मरता है तो तमाम मवाक़े क़ब्र उसके मरते ही अपनी आराइश करते हैं और कोई हिस्सा उनका ऐसा नहीं जो उसकी तमन्ना न करता हो कि वह इसमें मदफ़ून हो।

लीजिए क़ब्र के नाम से वहशत और इसके तसव्वुर से दहशत कैसी? मोमिन की वफ़ात पर तो हर क़ब्र इसकी तमन्ना ही में है कि इस मोमिन का लाशा वहीं से उठे और इसमें मदफ़ून हो। जन्नत की नौबत तो बाद में आयेगी, पहले क़ब्र ही उसके इस्तिक़बाल के लिये अपने आप को पेश करती है। जैसे किसी मुअज़्ज़ज़ मेहमान का इस्तिक़बाल किया जाता हैं और अपनी ज़ेब व ज़ीनत इसके लुभाने की ख़ातिर करती रहती है। ख़ूशक़िस्मत बन्दा–ए–मोमिन।

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक : ८ अगस्त २०१८ ई० वर्ष : १०

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

बाहर का बिगाड़ अन्दर के बिगाड़ का नतीजा है....................२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इन्सान की अस्लियत और हैसियत................................३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

यौन उत्पीड़न की रोकथाम...५
मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

हज – संतुलित तथा व्यापक इबादत............................७
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

तैयब उर्दगान की सफलता तथा आगामी विदेश नीति.........९
जनाब अब्दुल बारी मोमिन

टीपू सुल्तान – न्यायप्रिय शासक या पक्षपाती राजा........१२
जनाब सैयद हामिद मोहसिन

सब्र का जज़्बा...१५
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

तुर्की ख़िलाफ़ते उस्मानिया की राह पर.........................१६
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी० 229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉं, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

बाहर का बिगाड़ अन्दर के बिगाड़ का नतीजा है

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नद्वी

इस वक़्त पूरी दुनिया जिन सख़्त हालात से दो–चार है और ख़ास तौर पर हमारे देश में मानवता रहित घटनाएं घट रही हैं, उन्होंने पूरी इन्सानियत को शर्मसार कर दिया है। मालूम होता है कि इन्सानों की दुनिया में जानवरों का राज है। सारे रिश्ते पामाल हो चुके हैं। चोर कोतवाल बने घूम रहे हैं। पूरा देश तबाही के मुखद्वार पर खड़ा है। इन हालात में अगर ठन्डे दिमाग़ से सोचा जाए तो जिस तरह इसके पीछे एक पूरी प्लानिंग नज़र आती है उसी तरह इसमें बड़ी ग़लती मुसलमानों की भी नज़र आती है। हम दुनिया के सामने इस्लाम का अख़लाक़ी निज़ाम पेश न कर सके। दुनिया को हम यह बता न सके कि मानव मूल्य क्या हैं, और न हम अपनी अमली ज़िन्दगी से कोई अच्छा नमूना पेश कर सके। हमारे तर्ज़े ज़िन्दगी को देखकर हमारे बारे में यही फ़ैसला किया गया कि यह भी इन्सारी क़दरों और अख़लाक़ी निज़ाम से ख़ाली एक क़ौम है जिसके पास कुछ बाक़ी नहीं बचा। इस वक़्त दुनिया का सारा बिगाड़ हक़ीक़त में हमारे अन्दर के बिगाड़ का नतीजा है।

इतिहास का अध्ययन करने वाले ख़ूब जानते हैं कि मुसलमानों ने जब इस्लाम का अख़लाक़ी निज़ाम अपनी अमली ज़िन्दगी में ढाल कर पेश किया था तो दुनिया को अमन व सुकून हासिल हुआ था और इन्सानी दुनिया ने इसको अपनी एक ज़रूरत समझकर कुबूल किया था। मुसलमानों को इन्सानियत का मसीहा समझा गया था और यह एक वाक़्या था। मुसलमानों ने हमेशा इन्सानियत के मसीहा का किरदार अदा किया। कमज़ोरों की मदद की। मज़लूमों का साथ दिया। इल्म व अख़लाक़ को एकसाथ लाए। हर तरह की ख़ुदगर्ज़ी से पाक होकर उन्होंने दुनिया को इल्म से भर दिया और उसके साथ अख़लाक़ व इन्सानियत की क़दें आम कीं। इसकी एक छोटी सी मिसाल यह है कि बग़दाद के बड़े हास्पिटल में जो मुख़्तलिफ़ डिपार्टमेंट थे उनमें एक डिपार्टमेंट सिर्फ़ मरीज़ों की हमदर्दी के लिये था और इसमें ऐसे लोग थे जो मरीज़ों के क़रीब जाकर ऐसी बातें करते थे कि उनसे मरीज़ का सुकून मिले। अमन व शांति का हाल यह था कि एक बुढ़िया अपने सामान की गठरी सर पर रखकर निकलती तो मीलों का सफ़र करती और उसको किसी ख़तरे का एहसास न होता। आज वही मुसलमान हैं जिनको ख़तरा कहा जा रहा है। ख़तरा समझा जा रहा है। इसमें निसंदेह मीडिया का भी अहम रोल है। मगर यह भी एक हक़ीक़त है कि इसमें हमारे अन्दर के बिगाड़ का बड़ा हिस्सा है। कौन सी ख़राबी है जो मुसलमानों में नहीं। इस प्वाइंट पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। और इसको विषय बनाकर शहर–शहर, गांव–गांव पहुंचकर लोगों का ज़हन बनाने की ज़रूरत है।

एक बड़े शहर में किसी पाश इलाक़े में एक हिन्दु ने कॉलोनी तैयार की, किसी मुसलमान ने बहुत चाहा कि उसको वहां फ़्लैट हासिल हो जाए मगर वह हिन्दु राज़ी न हुआ। उसके बहुत से मिलने वालों ने कहा तो उसने अजीह बात कही: मैं मुसलमानों को फ़्लैट नहीं दे सकता, जहां मुसलमान होते हैं वहां तीन चीज़ें होती हैं; गन्दगी होती है, जिहालत होती है और आपस में लड़ाइयां शुरू हो जाती हैं। यह बात कहकर चले जाने की नहीं है। सोचने की है। क्या हम मुसलमानों ने आम तौर पर अपने तरीक़े से यह साबित नहीं कर दिया कि जो कहा जा रहा है वह सही है। निसंदेह अच्छे नमूने बहुत है, लेकिन फ़ैसला ज़्यादातर पर होता है।

वह दीन जिसकी बुनियाद ही इल्म पर पड़ी, सफ़ाई–सुथराई को जहां ईमान का हिस्सा बताया गया, और लड़ाई–झगड़े को बहुत ही बुरी हरकत कहा गया, इस दीन के मानने वालों को उन्हीं चीज़ों पर ताना दिया जाए। अजीब सी बात लगती है। मगर देखने से लगता है कि यह एक सच्चाई है। आम तौर से मुसलमानों के इलाक़ो में यह बीमारी पायी जाती है।

ज़रूरत इस बात की है कि इस बिगाड़ को दूर किया जाए और इस्लामी शिक्षाओं को अमली ज़िन्दगी में ढाल कर पेश किया जाए। यक़ीनन यही एक रास्ता है जिसके ज़रिये मुसलमान अपना खोया हुआ स्थान हासिल कर सकते हैं। वरना सिर्फ़ उम्मीदों और बातों से न पहले कुछ हुआ है न आगे उम्मीद है।

"न तुम्हारी तमन्नाओं से कुछ होगा और न किताब वालों की तमन्नाओं से कुछ हुआ है जो भी बुराई करेगा उसकी सज़ा पायेगा।" (सूरह निसा: 123)

इन्सान की अस्लियत और हैसियत

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

यह पूरी कायनात जिसमें सात आसमान और सात ज़मीनें हैं, इसमें ज़मीन बहुत हक़ीर है और आसमान बहुत बड़ी चीज़ है। और इससे मुताल्लिक़ चीज़ों की अज़मत, उनका वक़ार भी बहुत ज़्यादा है और उनकी पाकीज़गी बहुत ज़्यादा है। लेकिन ज़मीन हक़ीर है। ज़मीन में संडास भी है, गोबर और पाख़ाना भी है, गोया ज़मीन इन चीज़ों से बनी हुई है। लिहाज़ा आसमान के मुक़ाबले में ज़मीन बहुत हक़ीर और ज़लील है। लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी अज़मत का इज़हार फ़रमाया कि इन्सान को ज़मीन यानि मिट्टी से बनाया। गोया एक हक़ीर तरीन चीज़ से इन्सान को बनाया और फिर उसको वह रुत्बा दे दिया कि दूसरी मख़लूक़ात में उसको सबसे बड़ा बना दिया। ज़ाहिर है कि वही सबको पैदा करने वाला है, और वही फ़ैसला करता है। लिहाज़ा उसने इन्सान को एक हक़ीर चीज़ से बनाया और फिर उसको दूसरी मख़लूक़ात से हैसियत के लिहाज़ से ऊंचा कर दिया। गोया दो चीज़ें हो गयीं; एक हैसियत और एक अस्लियत। अगर ग़ौर किया जाए तो इन्सान की अस्लियत बहुत हक़ीर और छोटी है मगर हैसियत बड़ी है और इसलिए है कि इन्सान कहीं यह न समझ बैठे कि हम कुछ नहीं है और अल्लाह तआला यह चाहता भी है कि हम इस हक़ीक़त को समझें कि हम कुछ नहीं हैं। हम ज़लील तरीन और पस्त तरीन हैं। लेकिन अल्लाह तआला की शान है कि उसने हमको इज़्ज़त दे दी। ज़ाहिर है कि यह इज़्ज़त हमको अल्लाह ने दी है। वरना हमारी हैसियत इस इज़्ज़त की नहीं है। लिहाज़ा कोई भी शख़्स इस धोखे में न रहे कि हम कुछ हैं, बल्कि जो कुछ भी है वह अल्लाह की ज़ात है। जिसको वह इज़्ज़त अता फ़रमाए, वह इज़्ज़त वाला है और जिसको वह ज़िल्लत दे दे उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं है।

अल्लाह तआला ने हम इन्सानों को जो ग़ैर मामूली इज़्ज़त दी है, वह ख़ास तौर पर दो चीज़ों से दी है; एक इल्म और दूसरे अक़्ल। इन्सान के अलावा जिन्नों को छोड़कर जो मख़लूक़ात हैं उनको कुछ मालूम नहीं है। गाय को कुछ नहीं मालूम, भैंस और परिन्दों को कुछ नहीं मालूम। बस वह जहां उड़ रहे हैं और जहां देख रहे हैं उनको उतना ही मालूम है। फिर अपनी मालूमात से वह कोई बड़ा नतीजा नहीं निकाल सकते। कोई बड़ा फ़ैसला नहीं कर सकते, लेकिन अल्लाह तआला ने इन्सान को इल्म की सलाहियत दी, जिससे वह मालूमात हासिल कर सकता है, और जिन चीज़ों से उसको वास्ता पड़ता है उनकी मालूमात हासिल कर सकता है। फिर उन मालूमात से फ़ायदा भी उठा सकता है। फ़ायदा उठाने के लिये अक़्ल और मालूमात अहम ज़रिया हैं जिनसे वह फ़ायदा उठाएगा।

मालूम हुआ कि उन दो चीज़ों (इल्म व अक़्ल) के ज़रिये अल्लाह तआला ने इन्सान को घूमने फिरने और उसके काम करने का रक़्बा बहुत बड़ा बना दिया है। आप जो काम किसी से लेते हैं तो उसने जितना सीखा है उसी के लिहाज़ से लेंगे। जैसेः एक गंवार आदमी है जिसकी मालूमात बहुत कम है उससे आप बड़ा काम नहीं ले सकते। और एक शख़्स है जो बड़ा आलिम व फ़ाज़िल हो गया है। बहुत उलूम से वाक़िफ़ है, आप उससे उसी दायरे का बड़ा काम लेंगे, तो अल्लाह तआला ने इन्सान को जो अक़्ल व इल्म से नवाज़ा, वह इससे बड़ा काम लेने के लिये नवाज़ा जो दूसरी मख़लूक़ात से वह नहीं ले रहा है। और उसको काम करने के लिये सारे वसाएल भी दे दिये, जिनसे वह काम लेता है। खाने–पीने के लिये और आने–जाने के लिये और दूसरी सहूलियतों के लिये जानवर दिये, दुनिया में

अलग–अलग तरह के जानवर हैं, जिनसे इन्सान अपनी ज़रूरतें पूरी करते हैं। इसी तरह सूरज–चांद को लगाया गया और अल्लाह ने उनकी गर्दिश का ऐसा निज़ाम बनाया कि जिससे इन्सान को ज़िन्दा रहने और काम करने में मदद मिले। साइंसदां भी इस बात को जानते हैं कि सूरज का ज़मीन से जो फ़ासला है, अगर वह ज़्यादा हो जाए तो ज़मीन में इतनी ठंडक हो जाएगी कि इन्सान ज़िन्दा नहीं रह सकता और अगर फ़ासला कम हो जाए तो हर चीज़ जल जाएगी, क्योंकि सूरज की गर्मी बहुत है। इसी तरह चांद के लिये अल्लाह ने वही हिसाब रखा है और कुरआन मजीद में है कि इन सबको हमने तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र किया है, तुम्हारे लिये काम पर लगाया है। सारे जानवरों को, सारी ज़मीनी मख़लूक़ात को इन्सान के ताबेअ बनाया और उनकी फ़ितरत और मिज़ाज ऐसा बनाया कि आप गाय को पकड़े लिये जा रहे हैं, बकरी को पकड़े लिये जा रहे हैं और वह विरोध भी नहीं कर रही हैं। इनकार भी नहीं कर रही हैं। आपने बैल को हल में लगा दिया। अब बैल चल रहा है। उसको कोई विरोध व इनकार नहीं है हमको क्यों जोत रहे हो, हमसे क्यों मेहनत करवा रहे हो।

अल्लाह तआला ने कायनात की तमाम चीज़ें इन्सान को दीं और आला रुत्बा अता फ़रमाया, लेकिन इन्सान ख़ुद क्या है?वह हक़ीर और ज़लील है अगर अपनी अस्ल को देखे। इसीलिए अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में कई जगह यह याद दिलाया कि तुम पैदा कैसे होते हो। बहुत हक़ीर व ज़लील चीज़ से। तुम्हारा बीज बड़ा गन्दा है। दरख़्त का एक बीज होता है, जिससे दरख़्त बनता है। लोग बीज डालते हैं फिर वह ज़मीन से फटता है तो दरख़्त बनता है लेकिन इन्सान का बीज निहायत गन्दा है। वह बीज गन्दगी से निकलता है और अल्लाह तआला ने उसके जिस्म में पाकीज़ा बनने की सलाहियत भी रखी है वरना उसकी गन्दगी ऐसी नुमाया होती कि उसको दूर ही नहीं कर सकता था। ज़ाहिर है कि जब इसकी अस्ल के अन्दर गन्दगी है तो उसको कैसे दूर करेगा। यूं भी देखा जा सकता है कि हर इन्सान ज़ाहिरी तौर पर ख़ूब साफ़–सुथरा होता है, लेकिन अन्दर ग़लाज़त मौजूद होती है। जब वह निकलती है तो सब नहीं निकलती। पेशाब–पाख़ाना सब अन्दर मौजूद रहता है, लिहाज़ा हमें यह समझना चाहिये कि हम कितने हक़ीर हैं और इसके बावजूद हमको अल्लाह ने कैसा ग़ैर मामूली बुलन्द मक़ाम अता फ़रमाया है।

इन्सानों पर इस एहसाने अज़ीम का तक़ाज़ा यह है कि हम ज़िन्दगी का हर लम्हा अल्लाह की ख़ुशनूदी के मुताबिक़ गुज़ारने की कोशिश करें और हर–हर अमल से इस एहसान का शुक्र अदा करें। कुरआन मजीद में है कि अगर तुम शुक्रगुज़ार बन जाओगे तो हम नेमतों में इज़ाफ़ा करेंगे। यानि अगर तुम हमारे एहसान को मानोगे तो हम तुमको और बहुत ऊंची जगह दे देंगे। हम तुमको आसमान पर ले आएंगे। गोया जो आसमान वाला मक़ाम है वह तुमको मिल जाएगा। इस वक़्त तुम ज़मीन के मक़ाम पर हो। उसी में तुमको यह सारी इज़्ज़त हासिल है, लेकिन इसके बाद तुमको काम करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। हम तुमको बिल्कुल साफ़–सुथरा कर देंगे। बाज़ मर्तबा दुनिया में दीनदार लोगों के बीच इख़्तिलाफ़ हो जाता है, हालांकि दीनदार हैं, अल्लाह वाले हैं, लेकिन राय के लिहाज़ से इख़्तिलाफ़ होता है, तो इसके बारे में भी फ़रमाया गया कि आसमान वाला मक़ाम हासिल होने के बाद अल्लाह तआला दिलों से वह कैफ़ियत ही निकाल देगा। यह आपस में दीनदारों के दरमियान जो थोड़ी बहुत भी रंजिश है, उनको अल्लाह दीनदारी का बदला देगा, और उनके अन्दर वह कैफ़ियत निकाल देगा, ताकि वे बिल्कुल साफ़–सुथरे हो जाएं। लेकिन यह उसी वक़्त होगा जब हम शुक्र अदा करें। फ़रमाया गया है कि अगर ऐसा करोगे तो तुमको वहां पहुंचा देंगे और अगर नहीं करोगे तो गन्दी जगह पर लौटा देंगे, और गन्दगी का इलाज क्या है?अल्लाह तआला ने गन्दी चीज़ को ख़त्म करने के लिये आग रखी है, यानि आख़िरत की आग, लिहाज़ा जो शख़्स अपनी गन्दगी में जितना गन्दा होगा, और अल्लाह का नाफ़रमान होगा,

.....शेष पेज 11 पर

यौन उत्पीड़न की रोकथाम

मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी

जिन्सी जराएम पर जो चीज़ नौजवानों को वरग़लाती है, उनमें सबसे अहम लिबास का मसला है। नीम बरहना लिबास जिसमें बाज़ू खुले हों, पिन्डिलयां खुलीं हों, सीना और पीठ को ख़ास तौर पर खुला रखा गया हो, एक तरह से बिगड़े हुए लोगों के लिये गुनाह की दावत है। फिर उसके साथ–साथ चुस्त लिबास जिससे सर से पांव तक जिस्म का एक–एक नशेब व फ़राज़ नुमायां हो और उस नुमाइश को दो आतिशा करने के लिये ऊंची एड़ियों की चप्पलें आग में घी का काम करती हैं। और यह क़ानूने फ़ितरत के ऐन मुताबिक़ है। आप मिठाई को छिपाएं नहीं और मक्खियों से शिकायत करें कि वह क्यों उन पर टूट पड़ती हैं? इसलिए हुकूमत को ऐसा क़ानून बनाना चाहिये कि स्कूलों में पढ़ने वाली लड़कियां, आफ़िसों में जॉब करने वाली औरतें और मार्केट में निकलने वाली औरतें ख़ास तौरपर ऐसा लिबास पहनें जो ढीला–ढाला हो और सातिर हो, मज़हब से क़तअनज़र इन्सानी बुनियादों पर इस तरह का क़ानून बनाना चाहिये।

बाज़ बज़अम ख़ुद दानिशवर ख़्वातीन कहती हैं कि हम अपने जिस्म के मालिक हैं, किसी को यह हक़ नहीं कि हमें अपनी जिस्म की नुमाइश से मना करे। अभी पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में भी औरतों ने इस क़िस्म के नारे लगाए और अपने हाथों में प्लेकार्ड लेकर सख़्त इहतिजाज किया। उन्हें यह बात समझनी चाहिये कि आप ज़्यादा से ज़्यादा कमरे की तन्हाई में अपने जिस्म की मालिक हैं, क्योंकि आपके जिस्म की नुमाइश से दूसरों के अख़लाक़ या जज़्बात मुतास्सिर नहीं होते, लेकिन जब आप अपने घर से बाहर निकलती हैं तो आपके इस अमल से दूसरों के जज़्बात भी मुताल्लिक़ हो जाते हैं। इसलिए वहां सिर्फ़ अपनी मर्ज़ी पर अमल नहीं कर सकतीं।

दूसरी ज़रूरी चीज़ मर्दों और औरतों के इख़्तलात को रोकना है। आजकल आज़ादी निस्वां के नाम पर मख़लूत माहौल को तरक़्क़ी की अलामत समझ लिया गया है। स्कूलों, कालिजों और यूनिवर्सिटयों में शुरू से लेकर आख़िर तक तमाम तालीमी मराहिल में मख़लूत निज़ाम रखा जाता है। हालांकि मिडिल स्कूल के बाद से लेकर यूनिवर्सटियों के मराहिल तक तलबा व तालिबात की जो उम्र होती है वही ग़फ़वाने शबाब की उम्र है, जिसमें बहकने और बिगड़ने के काफ़ी अंदेशे होते हैं। फिर कारोबारी और सरकारी इदारों के दफ़्तरों में भी यही मख़लूत माहौल होता है। हद तो यह है कि पहले औरतों को नाइट ड्यूटी से मुस्तसना रखा गया था। लेकिन अब यह पाबन्दी भी ख़त्म कर दी गयी। रात गये जो कॉल सेन्टर मग़्रिबी मुल्कों के अवक़ात के लिहाज़ से चलते हैं, उसमें लड़कों लड़कियों की मुश्तरक ड्यूटी होती है। मुलाज़िमीन को आफ़िस तक लाने और ले जाने की गाड़ियां होती हैं, उनमें भी मर्द–औरत मुलाज़िमीन एक साथ जाते हैं, हर–हर मौक़े पर मर्दों और औरतों का यह इख़्तिलात अख़लाक़ी अक़दार के लिये सम्मे क़ातिल है। और इस सूरते हाल को बरक़रार रखते हुए पाकीज़ा माहौल की उम्मीद रखना फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। अगर आप एक ही जगह पेट्रोल भी रखें और आग भी, और उम्मीद रखें कि दोनों एक–दूसरे से बेताल्लुक़ रहेंगे तो इससे बड़ी भूल और क्या होगी? अफ़सोस है कि जो लोग माद्दी मामलात में इस उसूल को ख़ातिर में नहीं लाते, वही दीनी और अख़लाक़ी मामलात में इस उसूल को ख़ातिर में नहीं लाते। इस्लाम ने क़दम–क़दम पर जवान ग़ैर महरम मर्दों और औरतों के दरमियान इख़्तिलात को रोकने का निज़ाम रखा है। रसूलुल्लाह स0अ0 की अज़वाजे मुतहर्रात तमाम उम्मत की माएं थीं। उनके मुताल्लिक़ दिल में कोई नाज़ेबा ख़्याल लाना भी नाक़ाबिले तसव्वुर था, फिर भी कुरआन मजीद ने सहाबा को ताकीद की कि "अगर तुमको उनसे कोई सामान मांगना हो तो पर्दे के पीछे से मांगो।" (सूरह अलएहज़ाबः 53)

हुकूमत को चाहिये कि जैसे हॉस्पिटल में मर्दों और औरतों के अलग–अलग वार्ड हैं, रेलवे स्टेशन पर अलग–अलग वेटिंग रूम हैं, इसी तरह मिडिल स्कूल के बाद तालीम के तमाम मराहिल में तलबा व तालिबात के लिये जुदागाना निज़ामे तालीम हो। मर्दों और औरतों के मुश्तरका कामों जैसे बैंक वग़ैरह में मर्दों और औरतों के लिये अलग काउन्टर रखा जाए। बसों में औरतों के लिये महफ़ूज़ सीटें हों, ख़्वातीन को नाइट ड्यूटी से मना किया जाये, अगर इस तरह तालीम, मुलाज़मत, मार्केट वग़ैरह के लिये ग़ैर मख़लूत निज़ाम क़ायम कर दिया जाए तो न सिर्फ़ औरतों के तहफ़फ़ुज़ के लिये मुफ़ीद होगा, बल्कि

उनके लिये मुलाज़िमत के लिये कसीर मवाक़ेअ मुहैया होंगे और वह दबाव और ज़हनी तनाव से बचते हुए अपने फ़राएज़ अंजाम दे सकेंगे।

तीसरा ज़रूरी और अहम काम यह है कि उन तमाम चीज़ों को रोका जाए जो बेहयाई पर उकसाती हैं। इस्लामी नुक़्ताएनज़र से तो मौजूदा दौर की मुरवज्जा तक़रीबन तमाम ही फ़िल्में नाजायज़ हैं, क्योंकि बज़ाहिर कोई फ़िल्म प्यार व मुहब्बत के मनाज़िर, ख़ातीन के किरदार, मारधाड़ और क़त्ल व खून की अक्स बन्दी से ख़ाली नहीं होती। ये फ़िल्मे जुर्म के लिये तहरीक पैदा करती हैं। फ़िल्में देखकर लोग ज़िना बिलजब्र के मुरतकिब होते हैं। फ़िल्मी मन्ज़र की नक़ल करते हुए बच्चे अपने साथियों को फांसी के फंदे पर चढ़ा देते हैं। फ़िल्मों से मुतास्सिर होकर खुदकुशी के वाक़्यात पेश आते हैं। यह सारी बातें वह हैं जो शबो रोज़ अख़बार में आती थीं। अब सोशल मीडिया के ज़रिये घर–घर पहुंच रही हैं। बल्कि अब इसके लिये घर की वुसअत भी मतलूब नहीं है। शर्ट की एक जेब काफ़ी है। इस वक़्त सोशल मीडिया के ज़रिये ऐसा हैजान अंगेज़ मवाद समाज के एक–एक फ़र्द तक पहुंचाने की कोशिश की जा रही है कि टाकीज़ में बैठकर देखी जाने वाली फ़िल्में उसकी गन्दगी पर सौ बार निसार हो जाएं।

चौथी ज़रूरी तदबीर यह है कि समाज की अख़लाक़ी तरबियत पर तवज्जे दी जाए। बदक़िस्मती से सेक्यूलरिज़्म के नाम पर तालीमी इदारों में अख़लाक़ी तालीम की कोई गुंजाइश नहीं रखी गयी है। इन्सान के मिज़ाज को सही रास्ता पर क़ायम रखने में तालीम का बड़ा हिस्सा है। तालीम के ज़रिये इन्सान की सोच बनती है। फ़िक्र सही होती है औरे मुस्बत तब्दीली आती है। इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि अस्री तालीमी इदारो में इब्तिदा से लेकर दसवीं जमाअत तक अख़लाक़ी तालीम को लाज़िमी जुज़ बनाया जाए और उसमें कामयाबी को इम्तिहान में कामयाबी के लिये ज़रूरी तस्लीम किया जाए। अख़लाक़ियात की तालीम और अख़लाक़ी तरबियत से महरूमी का नतीजा है कि हमारा मुल्क एक तरफ़ तालीम में आगे बढ़ रहा है । इन्फ़ारमेशन टेक्नालाजी में पूरी दुनिया को हम अफ़रादी वसाएल मुहैया करते है। हमारे तैयार किये हुए हुनरम?द लोग फ़न्नी महारत की वजह से पूरी दुनिया में बेहतरीन मज़दूर माने जाते हैं। लेकिन दूसरी तरफ़ जराएम की कसरत के एतबार से हमारा मुल्म पूरी दुनिया में बदनाम है। और हमारा शुमार ऐसे मुल्कों में है जहां सब से ज़्यादा जराएज पेश आते हैं। यहां तक कि इस शोहरत की वजह से हमारे मुल्क में बमुक़ाबला दूसरे मुल्कों के सयाह कम आते हैं। हालांकि हमारे यहां तारीख़ी मासर बड़ मिक़दार में हैं। और ख़ूबसूरत फ़ितरी मनाज़िर की भी कमी नहीं है।

अख़लाक़ी तालीम के लिये ज़रूरी है कि हुकूमत या तालीमी इदारे एक ऐसा तालीमी निज़ाम मुरत्तब करें, जिसमें अख़लाक़ी फ़ज़ाएल को तरग़ीब दी जाए। अख़लाक़ी बुराइयों की क़बाहतें समझायीं जाएं। हर मज़मून के लिये मज़हबी किताबों और पेशवाओं के फ़रमूदात नक़ल किये जाएं और मौज़ू की मुनासबत से मुअस्सर वाक़्यात ज़िक्र किये जाएं। इस तरह हम ऐसी नस्ल तैयार करने में कामयाब हो सकेंगे जिसमें शर्म व हया हो। बड़ों की बात मानने का जज़्बा हो और अपनी रज़ामन्दी से गुनाहों से दूर रहने वाले हों।

पांचवी ज़रूरी तदबीर यह है कि ऐसे मुजरिमीन के लिये जिस्मानी सज़ा रखी जाए और यह सज़ा ऐलान के साथ दी जाए। इस्लाम ने ग़ैर शादीशुदा मर्द व औरत के लिये ज़िना की सज़ा सौ कोड़े रखी है। और शादी शुदा मर्द व औरत के लिये संगसार करने की सज़ा तय की है। जिसका ज़िक्र सही व मोतबर हदीसों में आया है। नीज़ यह दोनों सज़ाएं आम मजमें में नाफ़िज़ की गयीं हैं। क्योंकि जो सज़ा बरसरे आम दी जाती है, वह लोगों के लिये ताज़ियाना इबरत बनती है और जो सज़ा तन्हाई में दी जाती है और लोग उसे चश्मे इबरत से नहीं देख पाते तो उसका असर कम होता है। इसी तरह जराएम को रोकने में जिस्मानी सजाएं ज़्यादा मुअस्सिर होती हैं, जिन मुल्कों में शरई क़ानून नाफ़िज़ किया गया, वहां अमली तौर पर यह बात देखी गयी कि जिस्मानी सज़ा के जारी होते ही जराएम की शरह बहुत कम हो गयी।

मुल्कों से बही ख़्वाही और उससे मुहब्बत के जज़्बे से यह बात अर्ज़ है कि जुर्म को रोकने के लिये सख़्त सज़ाएं काफ़ी नहीं हैं। यह भी ज़रूरी है कि जराएम पर उकसाने वाले मुहर्रिकात का सद्दबाब किया जाए। और इस सिलसिले में इस्लाम की माकूल, फ़ितरत से हम आहंग और इन्सानी ज़रूरतों और मस्लहतों की रिआयत से भरपूर तालीमात की रोशनी हासिल की जाए और गांधी जी की इसबात को सामने रखा जाए कि आज़ादी हासिल होने के बाद देश को अबूबकर रज़ि0 और उमर रज़ि0 की तर्ज़े हुक्मरानी अख़्तियार करना चाहिये।

हज
संतुलित तथा व्यापक इबादत

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हज इस्लाम के अरकान में चौथा रुक्न है। अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

"और लोगों में हज का ऐलान कर दो, लोग तुम्हारे पास पैदल भी आएंगे और दुबली ऊंटनियों पर भी, जो दूर–दराज़ रास्ते से पहुंची होंगी।" (सूरह हज: 28)

"और लोगों के ज़िम्मे है हज करना अल्लाह के लिये उस मकान का यानि उस शख़्स के ज़िम्मे जो वहां तक पहुंचने की ताक़त रखता हो।" (सूरह आले इमरान: 98)

दूसरी जगह इरशाद है:

"जिस शख़्स को सफ़र के ख़र्चे मयस्सर हों जिनसे वह हज कर सकता है और हज न करे तो चाहे वह यहूदी होकर मरे, या ईसाई होकर।" (तिरमिज़ी: 817)

बन्दगी की तजदीद और इस्तख़ार के लिये अल्लाह तआला ने उम्र भर में एक बार हज फ़र्ज़ किया है, जिसमें बन्दा दुनिया वमा फ़ीहा से बेपरवाह होकर एक मौला के दरबार में सरेमस्त व बेख़ुद हाज़िर होता है और उस अहदो पैमान को ताज़ा करता है जो उसने अपने रब से किया था। उन कुर्बानियों को याद करता है जो अबुल अम्बिया सैयदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दी थी।

हर क़ौम व हर मज़हब में ऐसे मुक़द्दस मक़ामात होते हैं जिनको बरकत व तक़द्दुस की अलामत समझा जाता है। इस्लाम ने बैतुल्लाह को दुनिया का क़िब्ला क़रार दिया और इस्लाम की पहचानों में उसको सबसे अहम जगह दी है। और तमाम मुसलमानों को उसी की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है। इन्सान की नफ़सियात में यह बात दाख़िल है कि वह मज़ाहिरा तलाश करता है और ऐसी चीज़ की जुस्तुजु करता है जिसको वह अपनी माद्दी आंखों से देख सके और उसके ज़रिये अपने शौक़ के जज़्बे की तस्कीन कर सके और क़ल्ब व रूह की प्यास बुझा सके। उसके लिये अल्लाह तआला ने कुछ ऐसी ज़ाहिरी और महसूस चीज़ें मुक़र्रर की हैं जो अल्लाह की ज़ात से ख़ास हैं। उसी की तरफ़ मन्सूब है और उसी की कहलायी जाती हैं। उन पर तजल्लियाते इलाही का नुज़ूल होता रहता है और उनको देखकर खुदा याद आता है। यह सारी चीज़ें अल्लाह की पहचान कहलाती हैं और इनमें सबसे पाक बैतुल्लाह यानि अल्लाह का घर है। उसकी सारी पाकी व अज़मत सिर्फ़ इसलिए है कि वह अल्लाह का घर है। अल्लाह ने उसको बाअज़मत फ़रमाया है।

इरशाद होता है:

सबसे पहला घर जो लोगों की इबादत करने के लिये मुकर्रर किया गया वही है जो मक्का में है। मुबारक है और तमाम जहानों के लिये राहनुमा है। इसके तवाफ़ का हुक्म दिया है। इरशाद होता है:

"और क़दीम तरीन घर का एहतिमाम के साथ तवाफ़ करें।" (सूरह हज: 29)

लेकिन हक़ीक़त में इबादत अल्लाह की है। तवाफ़ हुक्मे इलाही की तामील है। मक़सूदे हक़ीक़ी सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी की ज़ात है। किसी हक़ीक़त शनास ने ख़ूब कहा है:

किब्ला को अहले नज़र क़िब्ला नुमा कहते हैं।

दूसरी क़ौमों और मज़ाहिब ने सूरत व हक़ीक़त के इस फ़र्क़ को खो दिया और शआएर को उन्होंने मक़सूद बना लिया और उन्हीं की इबादत में लग गये। इस्लाम ने कलिमात तलबिया में जो हाज़िरी के इरादे से निकले और एहराम बांधने के बाद शुरू हो जाते हैं उससे उसकी जड़ काट दी। बन्दा जब यह कलिमात पढ़ते हुए निकलता है तो उसका मक़सूदे हक़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है जिसके दरबार में वह हाज़िर हो रहा है। उस दरबार की सारी अज़मत इसलिए कि उसकी निस्बत ज़ाते अक़दस की तरफ़ है। हज्र–ए–असवद का इस्तलाम तवाफ़ ही की एक कड़ी है।

हजरत उमर एक बाद उसको बोसा देते हुए फ़रमाने लगे, इब्ने माजा में है:

"मैं जानता हूं कि तू पत्थर है। तेरे अन्दर न नुक़सान पहुंचाने की सलाहियत है न नफ़ा पहुंचाने की। अगर मैंने रसूलुल्लाह स0अ0 को बोसा देते हुए न देखा होता तो मैं बोसा न देता।" (इब्ने माजाः 3056)

यह इस्लाम का तवाज़ुन है कि उसने इन्सान के ज़ौक़ व शौक़ की तस्कीन का सामान भी किया और उसके साथ तौहीद की हक़ीक़त भी उसके दिल में उतारने के लिये ऐसे कलिमात और दुआएं तलक़ीन कीं कि सारी तवज्जे उस ज़ात की तरफ़ है जिसकी खुशनूदी के लिये बन्दा यह आमाल कर रहा है और मनासिक अंजाम दे रहा है।

फ़रीज़ा–ए–हज मोमिन बन्दे के लिये एक ऐसे ईमानी करन्ट की हैसियत रखता है जो सारी उम्र में एक बार काफ़ी है। फिर उसके लिये भी "मनिस तताअ इलैहि सबीला" की क़ैद लगा दी गयी है और इसी पर इसको फ़र्ज़ किया गया है। जो आने–जाने की इस्ततात रखता हो। न यह माज़ूर पर फ़र्ज़ है और न नादार पर।

अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ था कि वह बैतुल्लाह के हज का ऐलान आम कर दें। अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुर्बानियों को कुबूल फ़रमाकर उनको ख़िलत फ़ाख़रा पहनायी थी और इरशाद हुआ थाः

"और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया।" (सूरह निसाः 125)

अल्लाह ने उनके ऐलान को भी कुबूलियते आम्मा अता फ़रमायी और दुनिया के मुख़्तलिफ़ ग़ोशों से लोग ज़ौक़ दर ज़ौक़ हज के लिये आने लगे।

आसमानी मज़ाहिब जो सबके सब हक़ीक़तन इब्राहीमी हैं, निस्बन भी और निस्बतन भी। वह हज के क़ायल बल्कि इस फ़रीज़ा पर आमिल भी थे। नमाज ही की तरह उन्होंने इसको इस तरह फैला दिया कि उसका तसव्वुर भी उनके ज़हनों से महव हो गया और यह सिलसिला उमूमी तौर पर सिर्फ़ अहले अरब में रायज रहा। अरकाने अरबिया में से सिर्फ़ हज ही इस्लाम का ऐसा रुक्न है जिससे अहले अरब पूरी तरह मानूस और इस पर आमिल थे। लेकिन उन्होंने इसमें मुश्रिकाना रुसूम दाख़िल कर दी थी। और उसके अस्ल तरीक़े को बदल डाला था। इस्लाम ने आकर सारी इन्सानियत को उसके अस्ल मरकज़ से जोड़ा। हज का सही तरीक़ा उम्मत को दिया और उन सभी रस्मों को ग़लत करार दिया जिनका हज से कोई ताल्लुक़ नहीं था।

अहले अरब में यह दस्तूर था कि मनासिके हज से फ़ारिग़ होकर मिना में अपने बाप–दादाओं के बारे में फ़ख़्र से बयान करते थे। ज़िक्रे इलाही से उनको कोई मतलब नहीं था। इरशाद हुआ :

"अल्लाह का ज़िक्र करो अपने बाप–दादा के तज़किरे की तरह बल्कि इससे भी बढ़कर।" (सूरह बक़राः 200)

बरहना तवाफ़ करने का आम रिवाज था। कुरैश के अलावा कोई दूसरे क़बीले का फ़र्द अपने कपड़ों में तवाफ़ नहीं कर सकता था। इस बेहूदा रस्म को ख़त्म किया गया और 9 हिजरी में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने इसका ऐलान फ़रमा दिया कि कोई अब बैतुल्लाह का तवाफ़ बरहना न करे।

बाज़ अरब क़बीलों का यह भी दस्तूर था कि सफ़रे हज में ज़ादे राह लेना हराम जानते थे। नतीजा यह था कि भीख मांगने की नौबत आ पहुंचती। हुक्म हुआ :

"ज़ादे राह ले लो।" (सूरह बक़राः 97)

कुरैश ने अपना एक इम्तियाज़ यह भी क़ायम कर रखा था कि हुदूदे हरम से बाहर निकलना अपने मक़ाम से कमतर समझते थे। इसलिए मुज़दलिफ़ा में ठहरते थे। इस्लाम ने यह तख़्सीस ख़त्म कर दी और हुक्म हुआः

"कूच वहीं से करो जहां से सब लोग करते हैं।" (सूरह बक़राः 199)

इसके अलावा भी इस्लाम ने मुतादिद इस्तेलाहात कीं और वह तमाम रस्में ख़त्म कर दी जो मक़सद–ए–हज के ख़िलाफ़ थीं या इन्सानी इस्तेतात से बाहर।

तैयब उर्दगान की सफलता
तथा आगामी विदेश नीति

जनाब अब्दुल बारी मोमिन

जून 2018 के इलेक्शन में तुर्की के मर्दे आहन रजब तैयब उर्दगान ने एक कट्टर राष्ट्रवादी पार्टी (एम.एच. पी.) के गठबंधन से संसद में बहुमत प्राप्त कर लिया है। इससे पूर्व उन्होंने 2016ई0 में सैन्य विद्रोह को नाकाम करके जनता में ज़बरदस्त मक़बूलियत हासिल कर ली थी। इससे पहले ही उन्होंने तुर्की में राष्ट्रपति शासन प्रणाली की स्थापना के लिये ज़मीन हमवार कर ली थी। अब इस चुनाव के द्वारा जनता के वोटों के बहुमत के द्वारा वे इस राष्ट्रपति शासन प्रणाली के उच्चतरीन पद पर क़ाबिज़ हो चुके हैं। निसंदेह इस चुनाव के द्वारा राष्ट्रपति रजब तैयब उर्दगान की पोज़ीशन काफ़ी सृदढ़ हो चुकी है। उनको बिला शिरकत ग़ैरे बहुत से इन्तिज़ामी अख़्तियारात हासिल हो चुके हैं। पॉलिसी साज़ी में भी उनको बरतरी हासिल है। वह अपनी पॉलिसियों का नाफ़िज़ करने के लिये अब पार्ल्यामेंट के इतने मोहताज नहीं है, जितने पार्ल्यामानी निज़ामे हुकूमत में थे। वज़ीरे आज़म का ओहदा तो अब ख़त्म ही हो चुका है लेकिन दूसरी तरफ़ यह भी हक़ीक़त है कि क़ौम परस्त पार्टी (एम एच पी) और उर्दगान की इस्लाम पसन्द पार्टी के नज़रियात में भी मश्रिक़ और मग़रिब की दूरी पायी जाती है। देखना यह है कि इस सूरते हाल में हुकूमत को कामयाबी से चलाने में उर्दगान कितनी फ़रासत का मुज़ाहिरा करते हैं और कितनी कामयाबीसे हुकूमत चला पाते हैं। हम तो उन लोगों में शामिल हैं जो ख़ुदा से उनके हक़ में दुआएं करते हैं।

ख़ारिजा पॉलिसी की बात की जाए तो गुज़िश्ता बरसों से तुर्की की कामयाब ख़ारिजा पालिसी की तस्ख़ील में वहां के सिफ़ारतकारों का अच्छा ख़ासा रोल रहा है। यह लोग अपने काम में पेशावाराना महारत के हामिल हैं। तुर्की की रियासत के तीन अहम सुतून फौज, मालियात और ख़ारजी ताल्लुक़ात ही रहे हैं। उससे क़ब्ल तक यह तीनों अदारे किसी सियासी पार्टी के बजाय मुल्की दस्तूर के ज़्यादा पाबन्द रहे हैं। 2014 में उर्दगान के सदर बन जाने के बाद सिफ़ारत कारों का अमल दख़ल ख़ारिजा पॉलिसी में कम हो गया। उमूर ख़ारिजा के दफ़्तर में सियासी शख़्सियात का असर व रुसूख़ बढ़ता गया और अब 2018 के इन्तिख़ाबात में कामयाबी के बाद तो उनमें मज़ीद इज़ाफ़ा होने का इम्कान पैदा हो गया है लेकिन यह भी एक हक़ीक़त है ि कइस मामले में तजरबाकार माहिर सिफ़ारत कारों की अहमियत कम नहीं हुई है। दूसरी तरफ़ दाख़िली मामलात में भी अब सियासी शख़्सियात के अमल–दख़ल में यक़ीनन इज़ाफ़ा होगा। अपनी हुकूमत को मुस्तहकम करने के लिये इन दोनों इदारों के दरमियान तवाज़ुन क़ायम रखना सदर उर्दगान के लिये एक बड़ा चैलेंज साबित हो सकता है। ख़ारिजा पॉलिसी की कामयाबी का एक अहम तक़ाज़ा यह है कि दीगर मोमालिक के साथ इत्तेहाद, हमआहंगी और इख़्तिलाफ़ात हुदूद से आगे न बढ़ने पाये और उन्हें मुतवाज़िन अंदाज़ में क़ायम रखा जाये। अब तक के हालात तो यह बताते हैं कि सदर उर्दगान ने इस मामले में सारी दुनिया में अपनी मर्दे आहन की इमेज को बरक़रार रखा है और उसूलों की बुनियाद पर हमेशा एक तवाज़ुन बनाए रखा है।

दस्तूर की तब्दीली और सदारती निज़ाम के बिलकिया निफ़ाज़ के बाद हुकूमत चलाने के लिये पार्ल्यामेंट की अब पहले जैसी अहमियत बाक़ी नहीं रही लेकिन सियासी निज़ाम को चलाने के लिये अवामी तौर पर मुन्तख़िब अदारे की कुछ न कुछ अहमियत तो रहती ही है। ख़ास तौर पर इस सूरते हाल में कि जब पार्ल्यामेंट में एक जारेह क़ौम परस्त पार्टी भी इक़्तिदार में उर्दगान के साथ शरीक है। यह बात बईद अज़ क़यास मालूम होती है कि एम एच पी अपनेआप को सिर्फ़ पार्ल्यामानी उमूर तक ही महदूद रखेगी। इस बात

का क़वी इम्कान है कि वह पॉलिसी साज़ी और उसके निफ़ाज़ के अमल भी अपनी अहमियत जताने की कोशिश करेगी। इसमें दख़लअंदाज़ी की कोशिश करेगी। जो उर्दगान के लिये दुश्वारियां पैदा करने का बाइस बन सकती हैं। एम एच पी अपने इन्तिहा पसंदाना क़ौम परस्त नज़रियात के लिये जानी जाती है। दाख़िली मामलात में वह इन्फ़िरादी और शख़्सी आज़ादी से ज़्यादा मुल्की तहफ्फुज़ को अहमियत देती है जिसके नज़दीक अमन व अमान क़ायम रखने की ख़ातिर जम्हूरी आज़ादी को पसेपुश्त डालने में कोई हर्ज नहीं है। यही वजह है कि उसने इमेरजेंसी को बाक़ी रखने का मुतालबा किया है। हालांकि उर्दगान का इरादा अब इसको ख़त्म करना है। ख़ारजी मामलात में भी एम एच पी इन्तिहा पसंदाना और आमिराना मिजाज़ की हामिल है। इसलिए वह चाहती है कि कुर्दों के साथ सख़्ती से निपटा जाए। किसी भी दूसरे मुल्क से गहरी दोस्ती को वह हमेशा शक व शुब्हे की नज़र से देखती है। तुर्की के क़ौमी मफ़ादात में किसी भी क़िस्म की बैरूनी दखलंदाज़ी को बर्दाश्त करने की क़ायल नहीं है। जबकि मौजूदा सूरतेहाल यह है कि हुकूमत और सियासत में इस्लाम पसंदों का असर व रसूख बढ़ता ही जा रहा है। इस बिना पर मुस्लिम मुमालिक से ताल्लुक़ात को मज़बूत करने की अहमियत से इनकार नहीं किया जा सकता है। इस्लाम ख़्वाहमख़्वाह के लिये बैरूनी मुमालिक से मुख़ासमत का क़ायल नहीं है। तुर्की के ताल्लुक़ात तो मग़्रिबी मुमालिक से भी मज़बूत बुनियादों पर क़ायम हैं। अगरचे इस्राईल, बर्तानिया, यूरोप व अमरीका वग़ैरह पर सख़्त तनक़ीदें की जाती हैं, लेकिन उसके बावजूद उनसे इक़्तिसादी ताल्लुक़ात न सिर्फ़ क़ायम है बल्कि उनको मज़ीद मुस्तहकम करने की कोशिश भी की जाती है। ज़ाहिर है कि हर मुल्क को जियो और जीने दो के उसूल पर अमल करने की ज़रूरत है। कुर्द मसले के ताल्लुक़ से एम एच पी सख़्त मौक़िफ़ अख़्तियार करने की हामी है जबकि उर्दगान इसको जहां तक मुमकिन हो अपनी क़ायदाना डिप्लोमैसी के ज़रिये हासिल करना चाहते हैं। वह एक तरफ़ तो उनसे लड़ते हैं लेकिन अगर ज़रूरत हो तो उनसे बातचीत करने के लिये भी आमादा हो जाते हैं। जैसा कि 2015 में जेल में मुक़ीद कुर्दों के एक सियासी लीडर अब्दुल्ला औकलान के साथ उनकी बातचीत से ज़ाहिर है कि क्या एम एच पी इस तरह के इक़्दामात की मुख़ालिफ़त करके उर्दगान को कुर्द पॉलिसी में तब्दीली लाने पर आमादा कर पायेगी या यह चीज़ उनके दरमियान मज़ीद इख़्तिलाफ़ात का बाइस होगी। इसी तरह शाम का मसला भी है। तुर्की अपने पड़ोसी मुल्क शाम में कुर्दों के बढ़ते हुए असरात को रोकने की सख़्त ज़रूरत महसूस कर रहा है ताकि उसकी सरहदें महफ़ूज़ रह सकें लेकिन अमरीका कुर्दों के ताल्लुक़ से सख़्त इक़्दामात के ख़िलाफ़ है क्योंकि यह मसला दरअस्ल उसी का पैदा किया हुआ है। अब यह इख़्तिलाफ़ात दोनों मुल्कों के ताल्लुक़ात में किस क़द्र तल्ख़ी पैदा करेंगे यह तो वक़्त ही बताएगा। एम एच पी का नुक़्ताए नज़र तो यह है कि कुर्दों के साथ सख़्ती से निपटा जाए। एक तरफ़ तो वह इन्तिहा पसंदाना क़ौम परस्ती की क़ायल है और दूसरी तरफ़ अमरीका मुख़ालिफ़। इसलिए वह तो अमरीका मुख़ालिफ़ नुक़्ताएनज़र ही अपनाना चाहती है। इसके कट्टर अमरीका मुख़ालिफ़ नज़रियात से तुर्की की ख़ारिजा पॉलिसियों पर मनफ़ी असरात पड़ने का क़वी अंदेशा है। उर्दगान ईरान पर अमरीकी पाबन्दियों के मुख़ालिफ़ हैं। फ़तेहुल्लाह के गोलन के मामलात को हल करना चाहते हैं। इन मामलात में और इस तरह के दीगर मामलात में अगर एम एच पी कोई सख़्त रुख़अपनाएगी तो मुल्क की ख़ारिजा पॉलिसी को बेहतर अंदाज़ में चलाने के लिये मुश्किलात पेश आ सकती हैं। एक मसला यूरोप के साथ ताल्लुक़ात का है। एम एच पी तुर्की की यूरोपीय यूनियन में शुमूलियत की कोशिशों के ताल्लुक़ से काफ़ी मशकूक है। लेकिन इलेक्शन के दौरान तो उसने इस आरज़ू को ख़ैराबाद कहने की बात भी कही थी। अगर उर्दगान यूरोपीय यूनियन में शुमूलियत का इरादा तर्क नहीं करते तब भी यह शुमूलियत जिन दाख़िली तब्दीलियों के साथ मशरूत है (यानि जम्हूरी इस्लाहात और अमन व क़ानून का मुकम्मल निफ़ाज़) उनकी तकमील में एम एव पी मुश्किलात खड़ी कर सकती है। उसकी मुख़ालिफ़त के बाद उनका निफ़ाज़ आसान नहीं होगा। तुर्की के इन्तिख़ाबता के मआन बाद ही यूरोपीय यूनियन ने इस शराएत का अआदा किया और आइन्दा के तिजारती

मामलात में लिये इन पर अमल दरामद को ज़रूरी क़रार दिया। दूसरी तरफ़ इस बात का इम्कान है कि तुर्की जब तक अपने दहशतगर्दी मुख़ालिफ़ क़वानीन में तब्दीली से हिचकिचाता रहेगा यूरोपीय यूनियत तुर्की के शहरियों को वीज़ा देने में टालमटोल करती रहेगी। उसका कहना है कि तुर्की में इन्फ़िरादी आज़ादी पर क़दग़न लगाया जा रहा है। ज़्यादा इमकान इस बात का है तुर्की औरयूरोपीय यूनियन के ताल्लुक़ात अब सिर्फ़ चन्द मामलात तक ही महदूद रह जाएंगे। जैसे पनाहगुज़ीनों का मामला जिन्हें तुर्की में रोके रखने के लिये यूरोपीय यूनियन मुआवज़ा देती है (ताकि वह यूरोप में दाख़िल न हो सकें) तुर्की में इस वक़्त तैंतीस लाख से ज़्यादा पनाहगुज़ीन मुक़ीम है। दहशतगर्दी की मुख़ालिफ़त का मामला भी इसी क़बील से ताल्लुक़ रखता है। ऐसे मामलात के अलावा किसी उसूली बात की बुनियाद पर दोनों के दरमियान इत्तिफ़ाक़ या इत्तिहाद होना बहुत मुश्किल नज़रअ ाता है। अगर तुर्की की यूरोप से मुकम्मल जुदाई हो गयी तो यह चीज़ तुर्की की माशियत के लिये बहुत गिरां होगी। तुर्की की माशी तरक़्क़ी का इन्हिसार यूरोपीय मुमालिक से तिजारती ताल्लुक़ात पर है। मजबूरी की हालत में तिजारती ताल्लुक़ात तो क़ायम रखे जा सकते हैं लेकिन किसी सियासी और तजवीज़ी इत्तिहाद का इमकान मादुम होता नज़र आता है। एक मसला क़बरस का है, जहां बहुत बड़ी तादाद में तुर्क बाशिंदे रहाइश पज़ीर हैं। इस बात का इमकान कम है कि एम एच पी क़बरस के साथ मुआहिदा करने में उर्दगान की मुख़ालिफ़त नहीं करेगी।

ख़ारिजा पॉलिसी के सिलसिले में उर्दगान के साथ एमएचपी के इख़्तिलाफ़ात किस हद तक जा सकते हैं उसका इन्हिसार इस बात पर है कि मग़्रिबी ताक़तों के ख़िलाफ़ एमएचपी अपनी सियासी ताक़त का इस्तेमाल किस हद तक करेगी। अगर यह मुख़ालिफ़त हद से आगे बढ़ जाए तो शायद एमएचपी के साथ अपने इत्तिहाद को ख़ैराबाद कहकर उर्दगान को अपने दूसरे साथी तलाश करने होंगे। यह कहना मुश्किल है कि उनको इसमें किस हद तक कामयाबी हासिल होगी। यही वह चीज़ है जो उर्दगान की ख़ारिजा पॉलिसी के रुख़ को मशऐन करेगी।

शेषः इन्सान की अस्लियत और हैसियत

.....उसकी गन्दगी को उसी हिसाब से ख़त्म किया जायेगा।

अल्लाह तआला को राज़ी करने में सबसे बड़ी चीज़ अल्लाह का शुक्र अदा करना ही है। अगर हम अल्लाह को नाराज़ कर देंगे तो जिसके हुक्म से निज़ाम चल रहा है और जिसने यह कह दिया है कि हमारी बात मानोगे, हमको अपना ख़ालिक मानोगे तो हम तुमको और नवाज़ देंगे, वरना हम तुमको पस्ती की तरफ़ ढकेल देंगे। सूरह तीन में अल्लाह ने फ़रमाया कि हमने इन्सान को बेहतरीन कैफ़ियत में बनाया है। बेहतरीन मिज़ाज दिया है। और फिर उसको हमने उसी की जगह पर वापस कर दिया है जहां से वह पैदा हुआ है। अब वहां से उठने का काम इन्सान का है। इतना हमने कर दिया कि तुम बहुत गन्दे थे, लेकिन हमने तुमको साफ़ और पाकीज़ा होने और बड़े होने का तरीक़ा बता दिया है। इसीलिए अभी हम तुमको तुम्हारी जगह पहुंचा देते हैं और तुममें हमने पाक बनने की, बड़ा बनने की, ताहिर बनने की, बड़ा बनने की और ऊंचा मक़ाम हासिल करने की सलाहियत रखी है। यानि तुमको वह तरीक़ा बता दिया है। लेकिन अगर तुम उठो ही नही ंतो ज़ाहिर है कि अपनी जगह पर रहोगे और आख़िरकार तुम्हारी गन्दगी को आग जलाएगी। अगर तुम दुनिया में इसी तरह गंदे रहते हो तो जिसमें मुब्तिला होगा उसी हिसाब से उसको जहन्नम की आग जलाएगी। लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने मन्सब को पहचानें और अपनी ज़िम्मेदारी से वाक़िफ़ हों। अल्लाह तआला की वहदानियत को तस्लीम करें। अस्ल तौहीद यह है कि हम अल्लाह तआला की किसी सिफ़त में, अल्लाह के मक़ाम के किसी जुज़ में किसी को शरीक न समझें। यह यक़ीन रखें कि सब अल्लाह तआला करता है और करवाता है, यानि अल्लाह ने जिसको जो सलाहियत दी है उसके हिसाब से करवाता है, जैसेः आपको चाकू दिया कि आप फल काटें तो चाकू दिया तब आप काट रहे हैं, वरना नहीं काट सकते थे।

टीपू सुल्तान

न्यायप्रिय शासक या पक्षपाती राजा

जनाब सैयद हामिद मोहसिन

अट्ठारहवीं सदी के मैसूर के हुक्मरां हज़रत टीपू सुल्तान की शख़्सियत को मुतनाज़अ बनाने में मुतास्सिब मोअर्रिख़ीन का बड़ा हाथ रहा है। टीपू सुल्तान की दिलेरी और उनकी अपने वतन के लिये कुर्बानी लासानी और लाफ़ानी अहमियत की हामिल है। उन ख़ासियतों के एतराफ़ के बावजूद कई मुअर्रिख़ीन उन्हें ज़ालिम व जाबिर क़रार देते हैं। मगर इससे ज़्यादा तकलीफ़ देह बात यह है कि कुछ और तंग नज़र मुअर्रिख़ीन टीपू सुल्तान को कट्टर मुस्लिम बुनियादपरस्त शासक और मुतास्सिब हुक्मरां गिनते हैं। हालांकि इससे मुताल्लिक़ तारीख़ी दस्तावेज़ात उनकी फ़राख़दिली, वसीउल क़ल्बी और रवादारी की दास्तानों से भरपूर हैं।

हिन्दुस्तान में तारीख़निगारी में कोताहबीनी की रिवायत की इब्तिदा अंग्रेज़ो के दौर में हुई, जब उन्होंने मुल्क में ''फूट डालो और राज करो'' की पॉलिसी को अपना शेवा बनाया। इसकी ख़ातिर उन्होंने मुस्लिम दौरहे हुकूमत पर मुस्लिम नवाज़ी और हिन्दुओं के तईं मुतास्सिबाना पॉलिसियों की तोहमत लगायी ताकि हिन्दुओं में मुसलमानों के तईं नफ़रत पैदा की जा सके और मुस्लिम फ़रमा रवाओं की किरदारकुशी हो। मुस्लिम बादशाहों और हिन्दु राजाओं में सियासी कशमकश और जंग के मैदान में जंजा आज़माई इस अहद का फ़ितरी अक्र था। मगर अंग्रेज़ों की सरपरस्ती में मुअर्रिख़नी ने ऐसी तमाम कशमकशों के पीछे मुसलमानों की मुतास्सिबानापॉलिसी को मोरिदे इल्ज़ाम ठहराया। मैसूर के हुक्मरां हैदरअली और टीपू सुल्तान इसी पॉलिसी का ख़ास निशाना बने। क्योंकि उन्होंने अंग्रेज़ों के बढ़ते इक़्तिदार को चैलंज किया था और एक बार तो ऐसा भी हुआ किवह बर्तानवी अफ़वाज को ढकेलते हुए मद्रास के फ़ोर्ट सेंट जार्ज तक ले गये। ख़ैरियत हुई कि उन्होंने मुआहिदा किया वरना अंग्रेज़ों का क़लअ क़मअ हो जाता। उन दोनों हुक्मरानों का दौरे हुकूमत महज़ 38 बरस का था, जो 1761ई0 से 1799ई तक क़ायम रहा। अंग्रेज़ों को हैरत थी कि एक हिन्दु अक्सरियती इलाक़े पर मुस्लिम हुक्मरां कैसे हुकूमत कर रहे हैं? अगरचे वे हिन्दु रिआया को उनके ख़िलाफ़ बग़ावत पर उभार न सके मगर उनकी छोड़ी गयी तहरीरों से यह सुबूत मिलता है कि उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों में निफ़ाक़, अदावत, फूट और बदगुमानी के बीज बोने में कोई कसर न छोड़ी।

कुछ हल्के हिन्दुओं की आज़ादी के लिये लड़ने वालों की फेहरिस्त में टीपू की शुमूलियत के ख़िलाफ़ हैं, हालांकि टीपू को उस फ़ेहरिस्त में सरेफ़ेहरिस्त होना चाहिये, क्योंकि टीपू ने अर्ज़े वतन से न सिर्फ़ बर्तानवी साम्राज्य को बेदख़ल करने की कोशिश की बल्कि उसकी ख़ातिर अपनी जान भी कुर्बान कर दी और इतना ही नहीं उन्होंने अंग्रेज़ों से मुआहिदे की ख़ातिर अपने दो बेटों को उनके पास रहने दिया तावक़्त यह कि वह तक़रीबन ढाई करोड़ का तावान देकर उनको छुड़ाने के लायक़ न हो गये, और कमाल देखिये कि उनकी रिआया ने अपने हुक्मरानों की ख़ातिर टैक्सों के ज़रिये इतनी रक़म इकट्ठा किये जाने पर कोई एतराज़ भी न किया। रिआया की अपने हुक्मरां से वफ़ादारी, उसकी रवादाराना शबीह और किरदार की मुंहबोलती तस्वीर पेश करती है।

यह सही है कि टीपू सुल्तान को अपने ज़ाति अक़ीदे की बुनियाद पर अपने मज़हब से मुहब्बत थी। उन्होंने अपनी सलतनत का नाम ''सलतनते ख़ुदादाद'' रखा, मगर यह भी उतना ही बड़ा सच है कि उन्होंने अपनी रिआया के दरमियान बक़ाए बाहम की बुनियाद पर हुकूमत की। वह हिन्दु और मुस्लिम की तफ़रीक़ से ऊपर उठकर रिआया की फ़लाह व बहबूद के लिये फ़िक्रमंद थे। उनकी ''सलतनते ख़ुदादाद'' और इन्तिज़ामिया में हिन्दुओं को न सिर्फ़ आला बल्कि हस्सास और कलीदी ओहदे भी दिये गये थे। उनका वज़ीरे आज़म या दीवान पूर्निया था। अप्पाजी राव को पूना में, और मूलचन्द को देहली में, सफ़ीर किया गया था। उनका ज़ाति ख़िदमतगार सब्बाराव था, जबकि नाइकराव और नाइक संगना के उनके मोतमद ख़ास थे। नर्निया उनका मुहासिब और नागसपाकोरग में रियासते मैसूर का कमान्डेन्ट था। हरी सिंह उनकी सेना की एक डिवीज़न का कमान्डेन्ट था। शिवाजी उनकी शहसवार फ़ौज का कमान्डेन्ट था जिसमें तीन हज़ार घोड़े थे। यह तमाम हक़ाएक़ इस बात पर दलालत करते हैं कि टीपू सुल्तान ने कभी हिन्दुओं के साथ इम्तियाज़ी सुलूक नहीं किया। एक हुक्मरां जो हिन्दुओं से नफ़रत करता हो क्योंकर अपनी फ़ौज में कलीदी ओहदों पर उन्हें रखने का ख़तरा मोल ले सकता है।

टीपू सुल्ताने ने बेशुमार मन्दिरों को जागीरें,

तोहफ़ाजात और ग्रान्ट दिये, इस मुख़्तसर मज़मून में तफ़सील की गुंजाइश नहीं, यह कहना काफ़ी होगा कि टीपू सुल्तान ने सिर्फ़ ऐसा ख़ुद को सेक्यूलर साबित करने या जताने के लिये नहीं किया, क्योंकि उस वक़्त तक सेक्यूलरिज़्म जैसे नज़रियात आम तौर पर मारूफ़ न थे और हुक्मरानों को इसकी मुतलक़ ज़रूरत न थी कि वह किसी दिखावटी हरकतों के ज़रिये अवाम का दिल मोह लें, मंदिरों के साथ यह सुलूक महज़ इस ज़माने की रिवायत, भाईचारगी और मुहब्बत को जारी रखने की ग़रज़ से किया गया।

मंदिरों के साथ फ़य्याज़ाना बर्ताव और जंगों को हिन्दु और मुस्लिम ख़ानों में तक़सीम करने की ग़लती करके हुक्मरानों की रवादारी या अद्मे रवादारीसाबित करना चाहते हैं, लिहाज़ा बाज़ मुअर्रिख़ीन अंग्रेज़ो की लिखी हुई चन्द तहरीरों की बिना पर टीपू सुल्तान को भी इसी मीज़ान में तौलने की कोशिश करते हैं। टीपू सुल्तान ने जहां कोरग के राजाओं और केराला के नाइरों की सरकोबी की, नवाब आफ़ आराट अनवरुद्दीन के साथ जंग भी की जो अंग्रेज़ों का पिट्ठू था।

उड़ीसा के साबिक़ गवर्नर और मशहूर लेखक डॉक्टर विशम्भर नाथ पांडे अपनी किताब "औरंगज़ेब एंड टीपू – इवैलूएशन ऑफ़ देयर रिलीजियस पॉलिसीज़" में लिखते हैं: "अगर टीपू सुल्तान ने कोरग के हिन्दुओं, केरला के नायरो और मंगोर के ईसाईयों की सरकोबी की तो इसकी वजह यह थी कि वह टीपू की हाकिमियत को चैलेंज कर रहे थे और बर्तानवी हुक्मरानों की ताईद कर रहे थे। उसने यही बर्ताव मालाबार के मापला मुसलमानों और साव अनवर के नवाब और निज़ाम के साथ भी किया क्योंकि उसे इन तमाम से बर्तानवी हुक्मरां की हिमायत की शिकायत थी (यह किताब इन्सट्टीट्यूट ऑफ़ एजूकेटिव स्टडीज, नई दिल्ली ने प्रकाशित की है) इससे यह साफ़ है कि टीपू सुल्तान ने हर उस हुक्मरां या उन अनासिर के साथ सख़्ती का बर्ताव किया जिनमें वह बर्तानवी हुक्मरानों की ताईद देखते थे और जो उनके ख़िलाफ़ बर्तानवी फ़ौजों का साथ दे रहे थे या ख़ुफ़िया इमदाद कर रहे थे। लिहाज़ा यह कहना बिल्कुल दुरुस्त होगा कि टीपू ने वही कुछ किया जो उन हालात में सियासी हिकमते अमली का तक़ाज़ा था, न कि मज़हबी और एतक़ादी जज़्बात का। ग़ालिबन इसी वजह से महात्मा गांधी ने टीपू सुल्तान की तारीफ़ करते हुए लिखा है कि टीपू सुल्तान हिन्दु मुस्लिम इत्तिहाद की अलामत था।

टीपू सुल्तान की मंदिरों को दी गयी जागीर और अतियात की तफ़सील लम्बी है। मगर हम क़ारईन के रूबरू एक दूसरा पहलू लाना चाहेंगे। हालिया बरसों में कर्नाटक के श्रंगीरी के मशहूर मंदिर से बरामदशुदा दस्तावेज़ात से यह मालूम हुआ कि इस मंदिर को पूना के पेशवा हुक्मरानों की अफ़वाज में टीपू के अहद में हमला करके लूट लिया था और दीगर क़ीमती चीज़ों के साथ सारवादियों का सोने से बना बुत भी अपने साथ ले गये थे। श्रनगेरी मठ के बड़े पुजारी ने टीपू सुल्तान को इसकी बाबत लिखा था, इस पर टीपू ने उन्हें ख़त लिखकर गहरे दुख का इज़हार किया और इस बुत की बहाली का इन्तिज़ाम करने का वादा किया और सलतनते ख़ुदादाद से उसका नज़्म करवाया।

टीपू सुल्तान ने मद्रास के क़रीब कांचीपुरम के बड़े मंदिर की भी तामीर की तकमील के लिये अपने ख़ज़ाने से दस हज़ार हवन जारी किये और उसकी इफ़्तिताही तक़रीर में बनफ़से नफ़ीस शिरकत की। उन्होंने मलोकटे के मशहूर चलवारिया स्वामी मंदिर में पुजारियों के बीच झगड़े के तज़किया का नज़्म किया और फ़रीक़ैन के टीपू के फ़ैसले को कुबूल भी किया। डंडिगल की फ़ौजी मुहिम में उन्होंने राजा के महल के जुनूब में फ़ायरिंग करने से मना किया क्योंकि वहां राजा का ज़ाति मंदिर वाक़ेअ था। कर्नाटक के ही टुम्कूर ज़िले के सैबी नामी मक़ाम पर वाक़ेअ क़दीम मंदिर की छत में टीपू सुल्तान की तस्वीर नक़्श है। यह नक़्क़ाशी टीपू की शहादत के तक़रीबन पचार बरस के बाद अमल में आयी थी जो टीपू की हिन्दु अवाम में मक़बूलियत का पता देती है। कर्नाटक के देही इलाक़ों के देही गीतों में आज भी टीपू के क़सीदे गाये जाते हैं जो कन्नड़ ज़बान में लिखे गये हैं।

चार मई 1799 को अंग्रेज़ी फ़ौजों के हाथों टीपू सुल्तान की शहादत के बाद अंग्रेज़ी फ़ौजों ने श्रीरंगा पट्टम को कई दिनों तक लूटा लेकिन जहां एक तरफ़ अंग्रेज़ी फ़ौजें इस लूट में मसरूफ़ थीं वहीं दूसरी जानिब टीपू की वफ़ादार हिन्दु अवाम उनकी लाश के चारों जानिब सज्दा करते देखे गये। इस रिक़्क़त अंगेज़ मंज़र का तज़किरा अंग्रेज़ मुअर्रिख़ बिटिश मतूबा 1880 में पाया जाता है और कर्नाटक के वज़ीर मुहम्मद मुईनुद्दीन ने अपनी किताब सन सेट एट श्रीरंगपट्टम में इस हवाले को दर्ज किया है। यक़ीनन किसी मुतवस्सिब और ग़ैर रवादार हुक्मरान के

तईं हिन्दु अवाम का यह रवैया नहीं हो सकता।

टीपू सुल्तान पर मैसूर के प्रोफ़ेसर डॉक्टर बी शेख अली ने डॉक्टरेट का मक़ाला लिखा है। टीपू सुल्तान ए सेक्यूलर रूलर में वह रक़म तराज़ हैं कि टीपू सुल्तान के सत्तरह साला दौरे हुकूमत का सबसे दरख़्शां पहलू उनकी तरक़्क़ियाती पॉलिसियां थी। टीपू ने तिजारत, सिनअत और दस्तकारी और फुनून की तरक़्क़ी में बेपनाह दिलचस्पी ली। उन्होंने निज़ामें हुकूमत को चाक व चौबन्द बनाया और न्यू बहरिया (राकेट सिस्टम) तिजारत और सिनअत के सरकारी कन्ट्रोल का नज़्म किया। उन्होंने कागज़ और शकर कटली शीशा बन्दूक़ और असलहे की फ़ैक्ट्रियां क़ायम करवायी। शहरे गंजाम को सिनअती शहर के तौर पर तरक़्क़ी दी गयी। यहां कपड़ा और काज़ बड़ी मिक़दार में तैयार होता था। उसकी सलतनत में होनावर, मन्गूर और भटकल कर्नाटक के बड़े बन्दरगाह थे। यहां से सन्दल का तेल, तीशम, काली मिर्च, क़ालीन और हाथी दांत से बनी मसनूआत बरामद की जाती थी। उन्होंने मसक़त, जद्दा, बसरा और पीबू जैसे शहरों में अपने तिजारती सुफ़रा भेजे और अपने ज़ेरे इक़्तिदार ख़तों में डाक और कोआपरेटिव बैंकों (इमदादे बाहमी का नज़्म किया)

टीपू ने मुख़्तलिफ़ मक़ामात से दस्तकारों को बुलवाया और काम पर लगाया। ज़रूरत मंद किसानों को कर्ज़े दिलवाये और बंजर ज़मीनों को आबाद करने और ज़राअत करने के प्रोगाम बनाए। उन्होंने ज़मीदारी निज़ाम पर इन्तिनाह आयद किया। किसानों को अपनी पैदावार में से एक चौथाई पैदावार टैक्स के तौर पर देने का हुक्म दिया। अगर फ़सले ख़राब हो जाती तो टैक्स की माफ़ी होती। उन्होंने रेशमसाज़ी की हौसला अफ़ज़ाई की। उनकी रियासत में रेशम के 21 फ़ारम क़ायम किये गये। उन्होंने सज़ायाफ़ता क़ैदियों को शजरकारी करके सज़ा माफ़ करवाने का क़ानून नाफ़िज़ करवाया। टीपू सुल्तान के सलतनते ख़ुदादाद में बदउनवाद सरकारी हुक्काम और शरपसंद अनासिर का सख़्त सज़ाएं दी जाती थीं। टीपू सुल्तान ने सामाजिक बुराइयों जैसे शराब नोशी, ग़ुलामी और लावारिस बच्चों की ख़रीद–फ़रोख़्त से सख़्ती के साथ निपटने की ताकीद की। उनकी इस्लाहात का दायरा कैलेन्डर का तारुफ़, नाप–तौल के मीज़ान की तनफ़ीस, बैंक और मालिया की फ़राहमी, अफ़वाज और बहरिया की तंज़ीम, मालिया और अदलिया के क़याम पर मुहीत था। उन्होंने रहती नाम के सिक्के जारी किये जिन पर हिन्दु देवी–देवताओं मसलन शिव–पार्वती, श्रंगरी, शारदा और उड़पी कृष्णा की तस्वीर थीं और कन्नड़ और फ़ारसी में अल्फ़ाज़ कुन्दा थे।

चन्द फ़िरक़ो और तबक़ात में इन्सानों की क़ुर्बानी देना, एक ख़ातून के कई मर्दों के अज़दवाजी ताल्लुक़ात जैसी रस्मे रायज थीं, कुछ और क़ौमें ख़्वातीन को इन्तिहाई मुख़्तसर लिबासों में मलबूस रखती थी, अपने फ़रमानों के ज़रिये टीपू सुल्तान ने इन ग़ैर इन्सानी रस्मो रिवाज पर पाबन्दी लगा दी। इन सब इस्तलाहात के ज़रिये उन्होंने अवाम के बड़े तबक़े को अपना गिरवीदा बना लिया।

उनमें से कई इस्लाहात यक़ीनन क़दीम ज़माने से चली आ रही मज़हबी रिवायात का हिस्सा समझी जा कसती हैं और उनके सरकारी इम्तिनाक और मज़हबी रसूम में मदाख़िलत का इल्ज़ाम भी लिया जा सकता है। लिहाज़ा यह फ़ैसला हमें करना है कि आया यह इन फ़िरक़ों के जज़्बात को ठेस पहुंचाना था। इन्तिहाई मारूज़ी नुक़्ता–ए–नज़र से देखा जाए तो हिन्दुस्तान के उस ज़माने के बेहतरीन ताजदारों के दरमियान टीपू सुल्तान का ताज वाक़ई ज़्यादा ताबनाक और दरख़्शा नज़र आता है।

बंगाल के नामवर मुअर्रिख़ जद्दूनाथ सरकार टीपू सुल्तान को ख़िराजे अक़ीदत पेश करते हुए तहरीर करते हैं: "टीपू सुल्तान वाक़ई बहुत अज़ीम हुक्मरा थे, जिन्होंने अपनी हैरतअंगेज़ इस्तलाहात के ज़रिये समाजी इक़्तिसादी और सियासी मैदान में अज़ीम इस्लाहात नाफ़िज़ कीं।"

टीपू सुल्तान को कई ग़ैर जानिबदार बर्तानवी तारीख़दानों ने भी उनकी जिद्दत पसंदी और ग़ैर मामूली इन्तिज़ामी सलाहियतों और तरक़्क़ियाती कारनामों के लिये सुनहरी अल्फ़ाज़ में ख़िराजे अक़ीदत पेश किया है। एडवर्ड मोर अपने सफ़रनामे में लिखता है कि जब एक सयाह ऐसी अजनबी ज़मीन में सफ़र कर रहा हो जहां वह वहां की आराज़ी को सींचा हुआ और लहलहाती फ़सलों से भरपूर पाता है। लोगों को मेहनती और मुख़्तलिफ़ पेशों में मसरूफ़ देखता है। नये शहर उभरते हुए और तिजारत को ज़ोरो पर चलते महसूस करता है और इन्सानी चेहरों को फ़रख़न्दा पाता है तो इस एहसास से आरी नहीं रह सकता है कि यह अवाम ऐसी हुकूमत व नज़्म व नश्क़ के ज़ेरे साये ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं जो उनके दिल व दिमाग़ को मसहूर किये हुए हैं। यह वह मंज़र है जो हमें टीपू की रियासत में नज़र आया और यह हमारा उसकी हुक्मरानी से मुताल्लिक़ एहसास है।

सब्र का जज़्बा

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः "हज़रत सुहेब बिन सनान रज़ि0 से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि मोमिन का मामला भी ख़ूब है। उसका हर मामला ख़ैर ही ख़ैर है। मोमिन के सिवा किसी और को यह बात हासिल नहीं। अगर उसको ख़ुशी हासिल होती है तो वह शुक्र करता है और यह उसके हक़ में ख़ैर ही ख़ैर है और अगर उसको रंज और तकलीफ़ पहुंचती है तो वह सब्र करता है और यह भी उसके हक़ में ख़ैर ही ख़ैर होता है।"

(मुस्लिमः 2999)

फ़ायदाः सब्र के माने रुके रहने के हैं। शरई इस्लाह में सब्र का मफ़ूम यूं हैं। अल्लाह के एहकाम की पाबन्दी, गुनाहों के मौक़ों से दूरी और हर मुसीबत को अल्लाह की रज़ा के वास्ते बर्दाश्त करना। मानो सब्र दीन–ए–इस्लाम पर साबित क़दमी और इस्तिक़ामत की राह हमवार करता है और यह एक हिजाबी फ़ेल है, जिसके अन्दर मुस्बत मफ़ूम पाया जाता है और इसका नतीजा हमेशा ख़ुशगवार होता है। कुरआन मजीद में सब्र की बहुत से मौक़ो पर तलकीन है और सब्र करने वालों के लिये बेहिसाब अज्र का वादा है। इरशाद हैः "सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जायेगा।"

सब्र नबियों की सुन्नत है, जिसके नतीजे में उनको पेशवाई और इमामत का मन्सब सुपुर्द हुआ। इसलिए सब्र अम्बिया के मुत्तबिईन की लाज़िमी सिफ़त है और ईमान का जुज़ है। नबी करीम स0अ0 सहाबा से बैत लेते वक़्त सब्र पर भी बैत लेते थे। सब्र मुहब्बते ख़ुदावन्दी के पाने का आसान रास्ता है। मददे ख़ुदा शामिले हाल होने का ज़रिया है और बेशुमार भलाइयों और इनामों की कुंजी है। सब्र एक मोतदिल और मुतवाज़िन ज़िन्दगी अता करता है। यानि ख़ुशी के मौक़े पर अल्लाह की याद से ग़फ़लत नहीं होती और ग़म के मौक़ों पर रब से मायूसी नहीं होती। बिलाशुब्हा सब्र एक अज़ीम और लाज़वाल नेमत है जो इन्सान को बुलन्दियों से हमकिनार करती है।

सब्र की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं। जिनकी रिआयत से इन्सान के अन्दर यह वस्फ़ पैदा होता है। जैसे नमाज़ की पाबन्दी सब्र की आला तरीन शक्ल है। कुरआन मजीद में इस्तआनत के लिये नमाज़ और सब्र का हुक्म दिया गया है। यह भी सब्र में दाख़िल है कि इन्सान बदसुलूकी पर सब्र करे और अच्छाई से बदला दे ताकि उफ़ू व दरगुज़र के मिज़ाज से सब्र को जिला नसीब हो। उफ़ू व दरगुज़र और सब्र का मुतालबा उस वक़्त मज़ीद बढ़ जाता है जब ताक़त के बावजूद अच्छाई से बदला दिया जाये। बसूरते दीगर सब्र का दामन पकड़ना और दिल में नामुनासिब अज़ाएम रखना कमाल की बात नहीं। हदीस शरीफ़ में आता है कि हक़ीक़ी सब्र जो ग़मे लाहिक़ होने के फ़ौरन किया जाए वरना बाद में सब्र के अलावा कोई हल नही। लिहाजा ईमान के कमाल के बात यह है कि इन्सान अव्वल मरहला में ही सब्र करे और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी हो। इसी तरह अजीमत भी सब्र की एक शक्ल है कि इन्सान इशाअते दीन के लिये हर तकलीफ़ बर्दाश्त करे और अपने मौक़िफ़ पर क़ायम रहे और इस सिलसिले में पेश आने वाली किसी भी मुसीबत पर हर्फ़े शिकायत न लाये। जिहाद उसकी आला तरीन शक्ल है। इसके अलावा इन्सान जिस नेक मक़सद का भी इरादा करे उस पर जम जाए चाहे हालात कितने ही ख़राब हों। यह भी अज़ीमत में शामिल है और सब्र का एक पहलू इन्तिज़ार भी है और यह असहाबे दावत के लिये बहुत तवज्जे तलब है। यानि इन्सान किसी भी नेक काम और तब्लीग़ की राह में फ़ौरी तौर ख़ातिर ख़्वाह नजाएज न होने की सूरत में मायूस न हो बल्कि इन्तिज़ार करे और सब्र का दामन थामे रहे।

एक साहबे ईमान ज़िन्दगी के तमाम मराहिल में सब्र का पाबन्द है। अगर सब्र इबादात में हो इन्सान को हक़ीक़ी बन्दगी नसीब होती है। अगर सब्र मामलात में हो तो इन्सान ख़ुद्दार बन जाता है। और यही सब्र मुआशरती ज़िन्दगी में हो तो इन्सान मामले की समझ रखने वाला हो जाता है। इस तरह अगर इन्सान अपने अख़लाक़ से सब्र का मुज़ाहिरा करे तो हर एक का महबूब बन जाता है और अगर अपनी तिजारत व माशियत में भी सब्र की सिफ़त अपनाए तो बेनियाज़ी उसके क़दम चूमती है। सच फ़रमाया है नबी करीम स0अ0 ने कि किसी इन्सान को सब्र से बढ़कर और सब्र से बेहतर कोई और तोहफ़ा नहीं मिला।

तुर्की

ख़िलाफ़त–ए–उस्मानिया की राह पर

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अगस्त 1897ई0 में बेसल (स्विटज़रलैंड) में पहली अन्तर्राष्ट्रीय सियोनवादी सभा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर थियोडर हर्ज़ल (Thoedor Herzl) ने (World Zionist Orgnisation) अर्थात अन्तर्राष्ट्रीय सियोनवादी आन्दोलन की आधारशिला रखी। इस आंदोलन के मूलभूत उद्देश्यों में फ़िलिस्तीन में यहूदियों का प्रवास शामिल था। थियोडर हर्ज़ल ने पश्चिमी ताक़तों के समर्थन के बाद ख़लीफ़ा अब्दुल हमीद द्वितीय से मुलाक़ातें कीं तथा 1896ई0 से लेकर 1902ई0 के मध्य पांच बार ख़लीफ़ा के दरबार में उपस्थित हुआ। शुरूआती मुलाक़ातों में इस बात का प्रदर्शन किया कि यदि उस्मानी साम्राज्य यहूदी शरणार्थियों को पनाह दे तो वे साम्राज्य के अधीन रहेंगे और अपने कारोबार के द्वारा बड़ी रक़म कर के रूप में भी देंगे। सुल्तान अब्दुल हमीद ने यूरोप में उत्पीड़ित यहूदी शरणार्थियों के उस्मानी साम्राज्य में अन्तर्गत शरण देने की बात स्वीकार की किन्तु सशर्त कि उन सभी को एक जगह पर नहीं रखा जाएगा बल्कि वे देश के विभिन्न क्षेत्रों में बसाए जाएंगे। थियोडर हर्ज़ल का वास्तविक उद्देश्य यहूदियों की एक ऐसी बड़ी कम्पनी की स्थापना थी जो आवश्यकता पड़ने पर जितनी चाहे ज़मीन ख़रीद सके ताकि उनके खुफ़िया उद्देश्यों की पूर्ति संभव हो। अतः उसने सुल्तान की इस शर्त को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया तथा इस तरह उसके तथा सुल्तान के मध्य समझौता तय न हो सका।

हर्ज़ल ने अपनी आख़िरी मुलाक़ात में सुल्तान को एक बड़ी रक़म की पेशकश भी की और कहा: "यदि आप बैतुल मुक़द्दस (येरुशलम) और फ़िलिस्तीन में हमें जगह दें दे तो हम उस्मानी साम्राज्य का सारा क़र्ज़ा उतार देंगे और ऊपर से कई टन सोना भी देंगे।"

यह वह समय था जब उस्मानी साम्राज्य ख़तरे का शिकार हो चुका था। अर्थव्यवस्था बेहाल थी, क़र्ज़ का बोझ बढ़ चुका था, साम्राज्य की बुनियादें हिल चुकी थीं तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसका वज़न घट चुका था। ऐसी परिस्थिति में एक बड़ी रक़म की पेशकश उसकी अर्थव्यवस्था में बेहतरी तथा कर्ज़ की अदायगी के लिये बड़ा महत्व रखती थी तथा सुल्तान की प्राथमिक वरीयताओं में से एक साम्राज्य की आर्थिक स्थिति को बेहतर करना भी था किन्तु सुल्तान अब्दुल हमीन ने सियोनवाद के उद्देश्यों को भांपते हुए उस पेशकश को यह कहते हुए ठुकरा दिया था:

"I cannot sell even a foot of land, for it does not belong to me, but to my people. My people have won this empire by fighting for it with their blood and have fertilized it with their blood. We will again cover it with our blood before we allow it to be wrested away from us."

(मैं ज़मीन का एक फुट टुकड़ा भी नहीं बेच सकता क्योंकि यह मेरी नहीं बल्कि जनता की सम्पत्ति है। मेरी प्रजा ने यह साम्राज्य अपने ख़ून से प्राप्त किया है तथा अपने ख़ून से ही उसको सींचा है। इससे पहले कि हम उसे अपने हाथ से जाने दें, हम दोबारा उसे ख़ून से ढ़ांप लेंगे)

तुर्की की इस गई–गुज़री हालत में भी उसके ख़लीफ़ा ने अपनी दीनी ग़ैरत तथा इस्लामी शौर्य का सुबूत दिया। यद्यपि उसके बाद से ही तुर्की के ख़िलाफ़ साज़िशों का एक सिलसिला शुरू हो गया। यहूदी लाबी ने ईसाई ताक़त का भरपूर इस्तेमाल किया तथा अपने दानिस्त में यूरोप के इस "मर्द–ए–बीमार" की आख़िरी सांसे तक छीन लीं। अतः 1918ई0 में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति ने तुर्की की पराजय पर मोहर लगा दी। बिट्रेन की अध्यक्षता में विजयी राष्ट्र तुर्की के बड़े भू–भाग पर क़ाबिज़ हो गये और फिर विजयी व पराजयी के बीच रुस्वाकुन शर्तों के साथ एक ज़ालिमाना संधि हुई जिसे "लौज़ान की संधि" (Treraty of Lausanne) के नाम से जाना जाता है। यह संधि पूरे सौ साल पर आधारित है।

लौज़ान की संधि का आयोजन स्विटज़रलैंड के एक शहर "लौज़ान" में 24 जुलाई 1923 को मित्र देशों तथा तुर्की के मध्य हुई थी। इस संधि के अनुसार तुर्की के हाथ–पैर बांध दिये गये तथा तुर्की को अगले सौ साल के लिये इस संधि पर अमल करने का पाबन्द घोषित कर दिया गया। संधि की धाराओं तथा उन धाराओं में छिपी यूरोप की मुस्लिम दुश्मनी भी देखियेः

1– इस्लामी साम्राज्य का समापन किया जाएगा तथा उसकी जगह धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना होगी।

2– उस्मानी ख़लीफ़ा को उनके ख़ानदान समेत देश से बाहर कर दिया जायेगा।

3– ख़िलाफ़त की सभी सम्पत्तियां ज़ब्त कर ली जाएंगी जिनमें सुल्तान की ज़ाति सम्पत्तियां भी शामिल होंगी।

4– तुर्की पेट्रोल के लिये न अपनी धरती पर और न ही कहीं और ड्रिलिंग कर सकेगा। अपनी ज़रूरत का सारा पेट्रोल उसे इम्पोर्ट करना होगा।

5– बासफ़ोरस अन्तर्राष्ट्रीय समन्दर माना जाएगा और तुर्की यहां से गुज़रने वाले किसी समन्दरी जहाज़ से किसी प्रकार का कोई टैक्स वसूल नहीं करेगा।

ध्यान रहे कि बासफ़ोरस की समन्दरी खाड़ी बहर–ए–असवद है। बहरे मरमरा और बहरे मतूसत का लिंक है तथा उसके महत्व का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह अन्तर्राष्टीय व्यापार में रीढ़ की हड्डी की हैसियत रखने वाली नहर स्वेज़ की बराबर क़रार दी जाती है।

इस मुआहिदे के साथ ही ख़िलाफ़ते उस्मानिया की बिसात लपेट दी गयी और अफ़्रीक़ा, एशिया और यूरोप तक फैली हुई अज़ीम सलतन्त बन्दरबांट का शिकार हो गयी। यूरोप के इलाक़े छीन लिये गये। इराक़, उरदुन और फ़िलिस्तीन बर्तानिया के कंट्रोल में चला गया। शाम, लेबनान, अलजज़ाएर और लीबिया फ़्रांस के क़ब्ज़े में आये। अनातूलिया और आरमीनिया को तुर्की से काटकर आज़ाद मुल्क बना दिया गया। ख़लीफ़ा की मुल्क–बैरूने मुल्क जायदादें ज़ब्त करके मुल्क बदर कर दिया गया। इसी पर बस नहीं, ख़लीफ़ा की माज़ूली का परवाना लेकर उसी सहयूनी लीडर हर्ज़ल को भेजा गया जिसे ख़लीफ़ा ने फिलिस्तीन के मुतालबे पर अपने दरबार से दुत्कार से निकाला था। सहयूनियों की जानिब से यह लहराता हुआ वह खंजर था जो ख़िलाफ़त की कुबा चाक करता हुआ फ़िलिस्तीन के सीने में उतर गया।

चाक कर दी तुर्के नादां ख़िलाफ़त की कुबा।
अपनों की सादगी देख औरों की अय्यारी भी देख।।

मुबस्सिरीन की नज़र में इस्लामी तारीख़ के सानहों में सबसे दर्दनाक और कुर्बअंगेज़ सानेहा शायद 1923 ईसवी में ख़िलाफ़ते उस्मानिया के ख़ात्मे का था। तुर्की में ख़िलाफ़त क़ायम थी वह जैसी भी, मुसलमानों के इत्तिहाद और उनकी मरकज़ियत का उनवान थी। यही वजह थी कि हिन्दुस्तान की गलियां और बाज़ार तहरीक–ए–ख़िलाफ़त के पुरजोश नारों से गूंज उठे। यह अजीब तारीख़ी मंज़र था कि एक तरफ़ तुर्क नेशनलिज़्म और क़ौमियते अरबिया का हथियार आलमे इस्लाम के हिस्से बख़रे करने और ख़िलाफ़ते उस्मानिया को बिखेरने के लिये पूरी ताक़त के साथ इस्तेमाल किया जा रहा था। इन्हीं दिनों जुनूबी एशिया में क़ौमी रहनुमाओं मौलाना मुहम्मद अली जौहर, मौलाना शौकत अली, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, हकीम मुहम्मद अजमल ख़ान, डॉक्टर मुख़्तार अहमद अंसारी, डॉक्टर सैफ़ुद्दीन किचलू, चौधरी अफ़ज़ल हक़, मौलाना हबीबुर्रहमान लुधयानवी, मौलाना ज़फ़र अली खान और अमीरे शरीअत सैयद अताउल्लाह शाह बुख़ारी जैसे उलमा व क़ायदीन ख़िलाफ़ते उस्मानिया को बचाने के लिये सरगर्मे अमल थे। और वह बर्तानवी हुकूमत से ख़िलाफ़ते उस्मानिया के ख़ात्मे की मुहिम रोक देने का मुतालबा कर रहे थे। इस दौर का यह नारा आज भी पुराने लोगों के कानों में गूंज रहा है कि बोली अम्मा मुहम्मद अली की जान बेटा ख़िलाफ़त पे दे दो। इस मुहिम ने बड़ी हद तक गांधी और नेहरू भी तहरीके ख़िलाफ़त की हिमायत में थे और खुले बन्दो उसका साथ दे रहे थे। यह तहरीके ख़िलाफ़त बर्रे सग़ीर में सियासी तहरीकात की मां साबित हुई जिसकी कोख से आज़ादी–ए–हिन्द की सियासी तहरीकात ने जन्म लिया।

बहरहाल मज़कूरा शरायत पर अमल करते हुए दुनिया को एक नये तुर्की से मुतआरिफ़ कराया गया। इस नये तुर्की की सियासी बाग़डोर मग़रिबी एजेन्ट मुस्तफ़ा कमाल अता तुर्क के हाथों में थमा दी गयी। फिर सारी दुनिया ने देखा कि ख़िलाफ़ते उस्मानिया के ख़ात्में के बाद तुर्की में नवजवान तुर्कों का ग़लबा शुरू हो गया। यंग तुर्कस की इस्तेलाह निकली जिन्होंने मुस्तफ़ा कमाल पाशा की

क़यादत में इस्लाम पसंदों पर मज़ालिम ढाए। उलमा का क़त्लेआम किया। नमाज़ की अदायगी और तमाम इस्लामी रुसूमात पर पाबन्दी लगा दी। अरबी ज़बान में खुत्बा, अज़ान और नमाज़ बन्द कर दी गयी। मसाजिद के इमामों को पाबन्द किया गया कि वह तुर्क ज़बान में अज़ान दें, नमाज़ अदा करें और खुत्बा पढ़ें। इस्लामी लिबास उतरवा कर अवाम को यूरोपीय कपड़े पहनने पर मजबूर किया गया। मुस्तफ़ा कमाल पाशा और उसके साथी नवजवान तुर्कों ने तुर्की में इस्लाम को कुचलने के लिये जितनी गर्मजोशी का मुज़ाहिरा किया वह मुसलमानों को जितना नुक़सान पहुंचाया और उसकी मिसाल रूस और दीगर कम्यूनिस्ट मुल्कों के अलावा शायद कहीं और न मिले।

कमाल अता तुर्क ने तुर्की को बचाने के नाम पर यूरोप के मुतालिबे पर न सिर्फ़ ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी अख्तियार की थी बल्कि शरीअते इस्लामिया और मज़हबी शआएर को भी पूरी तरह मस्ख़ कर दिया जिसका तसलसुल 1938 तक क़ायम रहा।

दूसरी जंगे अज़ीम के बाद अवाम को कुछ जम्हूरी आज़ादियां नसीब हुईं। सियासत में अता तुर्क की रिब्लिकन पार्टी ही के बतन से डेमोक्रेटिक पार्टी ने जन्म लिया और अदनान मेन्द्रेज की क़यादत में दो पार्टी निज़ाम और दस्तूरी हुकूमत का यकगोना आग़ाज़ हुआ, जिसके नतीजे में अवाम को अपने दीनी और तहज़ीबी जज़्बात के इज़हार का कुछ मौक़ा मिला। दीनी शआएर पर जो पाबन्दियां थीं वह कुछ कम हुईं। अज़ान अरबी ज़बान में बहाल हुई। कुरआन और दीनी कुतुब से रुजूअ बढ़ा। दीनी मदारिस का अहया स्कूल की शक्ल में हुआ और इस तरह तुर्की ने अपनी अस्ल शिनाख़्त की तरफ़ मराजात के सफ़रे नौ का आग़ाज़ किया।

इस्लामी बेदारी की इन किरनों की वजह से तुर्की के सेक्यूलर निज़ाम में दरारें पड़ने लगीं और इसे ख़तरे की घंटी समझते हुए मुल्क की सेक्यूलर कूवतों ने जिनके चार सुतून फ़ौज, ब्यूरोक्रेसी, अदालत और मीडिया थे, मग़रिबी अक़वाम की मदद से तुर्की की ख़ुद अपनी दीनी और तहज़ीबी शिनाख़्त के ख़िलाफ़ एक नई कशमकश और तसादुम को फ़रोग़ दिया, जिसने मुल्क के अमन व सुकून को ग़ारत कर दिया। अदनान मेन्दरिस के ख़िलाफ़ फ़ौजी बग़ावत हुई और उन्हें फ़ांसी पर लटका दिया गया।

1923 से 1997 तक के नज़रयाती कशमकश के इस दौर में अदनान मेंदरिस के चन्द साला शोले के अलावा जिन दो शख़्सियात ने तारीख़ के रुख़ को मोड़ने का काम किया उनमें बदीउज़्ज़मा सईद अन्नूरसी (1876–1960) और नजमुद्दीन अरबक़ान (1926–2011) हैं। सईद नूरसी ने शुरू में अता तुर्क का साथ दिया लेकिन जब अता तुर्क ने सेक्यूलरिज़्म और मग़रिब की तक़लीद का रास्ता अख़्तियार किया, क़ौमियत के सेक्यूलर तसव्वुर को कूव्वत के ज़रिये मुसल्लत करने की कोशिश की और इस्लाम को इज्तिमाई ज़िन्द गी से बेदख़ल करने का एजेन्डा शुरू किया तो सईद नूरुसी ने उसे चैलेंज किया और क़ैद व बन्द की सौबतें झेंली, लेकिन इस्लाम की बुनियादी दावत और पैग़ाम को ज़िन्दा रखा और तसव्वुफ़ के सिलसिले नक़्शबन्दी के फ़रोग़, दीनी मदारिस के क़याम और अपने ख़ुतूत और तहरीरों के ज़रिये इस्लाम की शमा को रौशन और आम आबादी को दीन से वाबस्ता रखने की ख़िदमत अंजाम दी।

न्जमुद्दीन अरबक़ान ने इस दावती और रूहानी कोशिशों को अपने अंदाज़ में मज़बूत और मुस्तहकम करने के साथ दीन के इज्तिमाई ज़िन्दगी में किरदार के अहया को अपना मिशन बनाया और निहायत मुश्किल हालात में बड़ी हिकमत और दानिशमंदी और सब्र व इस्तिक़ामत के साथ तुर्की को उसकी दीनी व तहज़ीबी शिनाख़्त के अहया और उम्मते मुस्लिमा से एक बार फिर जुड़कर ताक़त की नई कूव्वत के हुसूल के रास्ते पर डाला। उसके साथ उन्होंने तुर्की को मग़रिब की सियासी, माशी और तहज़ीबी गुलामी से निकालकर ख़ुद इन्हिसारी और मिल्लते इस्लामिया से दोबारा जुड़ने और मरबूत होने के नये तारीखी सफ़र का आग़ाज़ किया।

1995 में होने वाले चुनाव में नजमुद्दीन अरबक़ान की रिफ़ाह पार्टी ने मुल्क के 21 प्रतिशत वोट हासिल कर लिये और एक दूसरी जमाअत के साथ शिराकत में हुकूमत क़ायम कर ली। तुर्की के ऐवाने नुमाइन्दगान आपको अपना क़ायदे ऐवान मुन्तख़िब कर लिया। अदनान मेन्द्रिस शहीद के बाद तुर्की के ऐवाने इक़्तिदार में पहला इस्लाम पसंद मर्द जरीह दाख़िल हुआ। आपने तुर्क अवाम को मेयारे ज़िन्दगी बुलन्द करने की ख़ातिर अहम कसीरुल जहती अक़दामात किये। आपकी मुतदिल मिज़ाजी और फ़रासत का करिश्मा यह है कि आपने तुर्क सियासत का महवर सेक्यूलरिज़्म से इस्लाम में तब्दील कर दिया । तुर्क फ़ौज के सेक्यूलर पसंदों को आपकी बल्कि दूसरे अल्फ़ाज़ में

इस्लामी तर्ज़े हुक्मरानी की तेज़ी से बढ़ती हुई मक़बूलियत कहां गवारा हो सकती थी। उन्होंने सिर्फ़ एक साल बाद ही अपनी ख़ब्स बातिन का मज़ाहिरा करते हुए आपकी हुकूमत ख़त्म कर दी। इस बार आपके अमली सियासत में हिस्सा लेने पर भी पाबन्दी आयद कर दी गयी।

न्जमुद्दीन अरबुक़ान के बाद तुर्की के निज़ामें हुकूमत में इस्लामी रूह फूंकने का कारनामा मौजूदा सदर हाफिज़ रजब तैयब उर्दगान ने अंजाम दिया। इब्तिदाई दौर में वह तुर्की के क़द्दावर इस्लामी नज़रयाती व सियासी रहनुमा नजमुद्दीन अरबक़ान की रिफ़ाह इस्लामी पार्टी से जुड़े रहे। उन्होंने बाज़ अमली मुसालह से इन्साफ़ और वकास पार्टी क़ायम की जिसकी रूह अरबुक़ान की तहरीक का ही परतू है। इसी तहरीक की बदौलत तुर्की में जौहरी तब्दीलियों का दौर शुरू हुआ। सेक्यूलरिज़्म के नाम पर अवाम पर मुसल्लत जबरी लादीनियत का हिसार टूटा। मज़हबी आज़ादी ने अवाम को रूहानी सुकून दिया और दीनी शेआर व अक़दार की बहाली ने स्कूलों कालिजों दफ़तरों और बाज़ारों के माहौल को नया रंग व आहंग अता किया। पहले वज़ीरे आज़म और फिर सदर की हैसियत से जनाब रजब तैयब उर्दगान और उनके पेशरौ सदर अब्दुल्लाह गुल का इस तब्दीली में अहम किरदार रहा। ज़ाहिर है कि इस्लामोफ़ोबिया के आलमी माहौल में तुर्की में कमाल अता तुर्क की लादीनी विरासत का सिमट जाना और यूरोपही के एक मुल्म में फिर से इस्लाम का रंग उभर आना बहुत से ज़हनों में ख़ार की तरह चुभता है।

स्दर उर्दगान ने इस्ताम्बुल के मेयर 1994–1998 से मौजूदा मन्सबे सदारत तक तवील सियासी सफ़र तय किया है। तुर्की को जो यूरोप का बीमार कहलाता था इक़्तिसादी एतबार से मज़बूत किया। तुर्की ने तामीराती मैदान में कमाल की तुर्की की और दुनिया की सबसे बड़ी तामीराती इन्डस्ट्री खड़ी कर ली। ज़राअत और बाग़बानी से पैदावार और बरामदात में एक दहाई में तीन गुना से ज़्यादा बढ़ोत्तरी हुई। अवाम की बुनियादी ज़रूरतों जैसे सेहत, ख़िदमात, पानी की दस्तयाबी, सड़क, मुवासलात वग़ैरह को वुस्अत हासिल हुई। तालीम के शोबे में बड़ा काम हुआ। आला तालीम के लिये बड़ी तादाद बैरूनी तलबा तुर्की का रुख़ करने लगे हैं। यह सारे तरक़ियाती काम सदर उर्दगान की मक़बूलियत की बुनियाद बने जिसका अंदाज़ा 2016 में फ़ौजी बग़ावत के वक़्त हो गया था। जब अवाम जदीद असलहे से लैस फ़ौजियों और उनके टैंकों के सामने सीना सिपर हो गयी। उनको आगे नहीं बढ़ने दिया और दुनिया की आंखें खुली की खुली रह गयीं।

तैयब उर्दग़ान की मक़बूलियत को मग़रिबी ताक़तों ने बहुत संजीदगी से लिया क्योंकि उर्दगान की इस्लाम पसंदी न सिर्फ़ सेक्यूलरिज़्म के लिये ख़तरा है बल्कि पूरे यहूदी व मसीही इक़दार के लिये भी एक चैलेंज है। अगर तुर्की दोबारा अपनी साबिक़ा ताक़त हासिल करता है और उस्मानी शान व शौकत के साथवह आलमी सियासत में क़दम रखता है तो मग़रिबी ताक़तों को दोबारा सरनिगों होना पड़ सकता है। इसी तरह इशारा करते हुए उर्दगान अपनी तक़ारीर में यह कहते क्यों नज़र आते हैं कि 2023 के बाद तुर्की पहले जैसा नहीं रहेगा। उन्होंने बारहा कहा है कि 2023 के बाद तुर्की एक कमज़ोर और बीमार मुल्क नहीं रहेगा बल्कि एक ताक़तवर और तरक़की याफ़ता मुल्क की हैसियत से उभरकर यूरोपीय साज़िशों के सामने सीना तान कर खड़ा होगा। हम तुर्क सरज़मीन पर अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ तेल और दीगर मादिनयात भी तलाश करेंगे और नहरे स्वेज की तरह एक ऐसी नहर भी खोदेंगे जो बहरे असवद को बहरे मरमरा के साथ मिलाकर मरबूत करेगी। इस नहर की खुदाई के बाद तुर्की यहां से गुज़रने वाले हर बहरी जहाज़ से टैक्स वसूल करेगा जिससे तुर्क माशियत मज़बूत से मज़बूत तर होगी।

मज़कूरा तफ़सीलात ही की रोशनीमें यह कहानी वाज़ेह हो जाती है कि मग़रिब क्यों उर्दगान का इतना सख़्त दुश्मन बना हुआ है और मग़रिब के अपने मफ़ादात किस रतह है और उर्दगान क्यों तुर्की के लिये एक पॉवरफुल मुन्तज़िम और सदर चाहते हैं। तैयब उर्दगान का यह ख़्याल बिल्कुल ठीक है कि लूला–लंगड़ा और कमज़ोर सदर तुर्की के लिये ज़यादा जुर्रात मंदी से अहमतरीन फ़ैसले नहीं कर पायेगा और न ही यूरोपीय मुमालिक की साज़िशों का मुक़ाबला करने की इसमे जुर्रत होगी। तज़ज़िया निगार के मुताबिक़ यह बात तुर्की के मफ़ाद में है कि अमरीकी तर्ज़ पर सदारती अख़्तियारात से लैस तुर्क फ़ौज का कमान्डर इन चीफ़ और क़ौम का एतमाद रखने वाला सदर तुर्की को उसका आबरूमन्दाना मक़ाम दिला सके। चुनान्चे इसी मंजर व पसज़र में 24

जून दिन रविवार को तुर्की में सनसनीखेज़ चुनाव हुए। लगभग 6 करोड़ तुर्क नागरिकों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिये 6 उम्मीदवार मैदान में थे। तुर्की के चुनावी क़ानूनों के अनुसार यदि किसी भी उम्मीदवार को 50 प्रतिशत से अधिक वोट नहीं मिलते तो सबसे अधिक मत प्राप्त करने वाले दो उम्मीदवारों के मध्य दोबारा चुनाव कराया जाता है जिसे रन–ऑफ़ (Run-Off) कहा जाता है और उसके लिये 8 जुलाई की तारीख़ तय थी। तैयब उर्दगान की पूरी कोशिश थी कि उन्हें पचास प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त हो जाएं ताकि उन्हें वोटिंग के दूसरे राउन्ड में न जाना पड़े, अतः ऐसा ही हुआ। उर्दगान को 53 प्रतिशत वोट मिले जबकि उनके विरोधी मुहर्रम उन्से को 31 प्रतिशत वोट मिले। इस प्रकार रजब तैयब उर्दग़ान ने राष्ट्रपति पद के चुनाव में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त कर ली।

यह इन्तिख़ाबात इस लिहाज़ से बेहद अहम थे कि अब तुर्की में सदारती निज़ाम पर अमद दरामद क़ामय हो जाएगा। इस निज़ाम के तहत इन्तिज़ामिया और संसद को बिल्कुल अलग कर दिया जाएगा और अमरीका की तरह वुज़रा क़ौमी असेम्बली के रुक्न नहीं होंगे बल्कि अगर सदर किसी रुक्ने क़ौमी असेम्बली को काबीना का रुक्न नामज़द किया तो उसे वज़ारत का हलफ़ उठाने से पहले संसद की रुक्नियत से इस्तीफ़ा देना होगा। संसद सिर्फ़ कानून साज़ी के फ़राएज़ अंजाम देगी और तमाम इन्तिज़ामी अख़्तियारात सदर के पास होंगे। वज़ीरे आज़म का मंसब ख़त्म कर दिया जाएगा और सदर अपनी नयाबत के लिये नायब सदर नामज़द करेंगे जो संसद का सरबराह होगा।

तुर्की में नाफ़िज़ होने वाले सदारती निज़ाम के तर्जुबे के बाद यह सवाल भी उठता है कि आज ज़मामे इक़्तिदार रज्जब तैयब उर्दगान जैसे दीनदार शख़्स के सुपुर्द है और उम्मीद है िकवह इन अख़्तियारात को तुर्क क़ौम और उम्मते मुस्लिमा के हक़ में मुअस्सिर तर बनाएंगे। ताहम सियासी मुफ़क्करीन का कहना है कि ऐसा निज़ामे हुकूमत जिसमें कुल अख़्तियारात एक फ़र्द उसके गिर्द चन्ह अफ़राद के हाथों में सिमट आते उस वक़्त बदतरीन निज़ााम बन जाता है जब बदनियती कोताहअंदेशी और ग़लतरवी राह पा जाए। मौजूदा क़ानून के तहत सदर उदर्ग़ान ज़्यादा से ज़्यादा 2032 तक बरसरे इक़्तिदार रह सकते हैं। लेकिन क्या लाज़िम है कि उनके बाद आने वाले अफ़राद भी मुल्क व मिल्लत के मफ़ाद में इन अख़्तियारात को जो सदरे मोहतरम ने अपने लिये हासिल किये हैं इसी ज़ेरकी और दयानत से इस्तेमाल कर सकेंगे। निज़ाम में वज़ीरे आज़मका मन्सब ख़त्म हो जाएगा। वज़ीरों का तक़र्रुर बराहेरास्त सदर करेंगे, इसलिए वह सदर को जवाबदेह होंगे, संसद को नहीं, जिससे संसद कमज़ोर होगी। ऐसा निज़ाम जिसमें मुअस्सिर निगरानी और तवाज़ुन का मैकेनिज़्म शामिल न हो, मुल्क व मुआशिरे के लिये ख़तरा बन जाता है। ख़ास करके ऐसी सूरत में जब बड़ी अययार ताक़ते दीगर मुमालिक के हुक्मरानों और वसाएल का इस्तेमाल अपने मफ़ाद में करने की महारत रखती हैं। यह सूरत में अवाम में बेइत्मिनानी और मुल्क में सोरिश को हवा दे सकती है। इसलिए हमें सिक्के के इस दूसरे रुख़ से भी बाख़बर रहने की ज़रूरत है। और उर्दग़ान से यह उम्मीद की जा सकती है कि वह इस निज़ाम में देर–सवेर सेक्यूलरिज़्म की जगह इस्लामियत को जुज़ लायनफ़क़ के तौर पर शामिल करेंगे ताकि उनके बाद कोई ऐसा शख़्स आसानी से कुर्सी–ए–इक़्तिदार पर क़ाबिज़ न होने पाये जो उन अख़्तियारात का ग़लत इस्तेमाल करे और आलमे इस्लाम एक बार फिर कमाल अता तुर्क के अहदे इक़्तिदार को देखकर ख़ून के आंसू बहाए।

चुनाव जीत जाने के बाद उर्दग़ान को बहुत से गंभीर चैलेंजों का सामना है। यूरोप के अक्सर देशों का रवैया तुर्की से दुश्मनी का है जिसकी वजह से इन देशों ने बहुत सी ग़ैर ऐलानिया पाबन्दियां भी लगा रखी हैं। और आगे भी वह अपनी दुश्मनियां भी ज़ाहिर करते र हेंगे। पिछले कुछ समय से तुर्क लीरा (Turkish Lira) शदीद दबाव में है। इधर कुछ माह के दौरान उसकी क़ीमत में 20 प्रतिशत कमी हुई है। तुर्की की इराक़ और शाम से मिलने वाली सरहदों पर कशीदगी है, जिसकी वजह से अनक़रा कि दिफ़ाई इख़राजात बहुत ज़्यादा हैं। इक़्तिसादी तरक़्क़ी के लिये उर्दग़ान ने तयारा साज़ी की सिनअत के क़याम, शमसी तवानाई के फ़रोग़ और दिफ़ाई सिनअत को तरक़्क़ी देने का मन्सूबा बनाया है। तुर्क क़ौम 5 साल बाद 2023 में मुल्क की प्रतिव्यक्ति आय के लिये 23 हज़ार डॉलर का हदफ़ तय किया है जबकि इस वक़्त फ़ीकस आमदनी 11 हज़ार डॉलर के क़रीब है। गोया वक़्त कम है और मुक़ाबला सख़्त।

माता–पिता का आभार प्रकट करना

इनसान जब पैदा होता है तो उसके माता–पिता पर कितना बोझ पड़ता है, विशेषतय: उसकी माता पर, अत: इनसान को अपने पैदा को वाले माता–पिता का आभारी होना चाहिए।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

"और हमने इनसान को उसके माता–पिता के बारे में चेतावनी दी है, उसकी मां ने तकलीफ़ें उठाकर उसको पेट में रखा और दो बरस में उसका दूध छूटता है कि तू मेरा और अपने माता–पिता का आभार प्रकट कर, मेरी ही ओर पलट कर आना है।"

एक जगह आता है:

"कह दो तारीफ़ अल्लाह के लिए है।"

अपने नेक बन्दों के बारे में इस प्रकार कहता है:

"और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सब तारीफ़ अल्लाह की जो तमाम जहानों का पालने वाला है।"

हम्द व शुक्र के कलिमे

अल्लाह तआला ने अपने पाक रसूलुल्लाह स०अ० की ज़बान द्वारा हम्द व शुक्र (प्रशंसा व आभार) के ऐसे कलिमे हमको सिखाए हैं और ऐसी तस्बीह की शिक्षा दी है जिनके पढ़ने से अल्लाह की रज़ा और रसूलुल्लाह स०अ० की मुहब्बत हासिल होती है।

हज़रत समरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया, सभी कलिमों में श्रेष्ठ यह चार कलिमे हैं:

१. सुब्हानल्लाहि
२. अलहम्दुलिल्लाहि
३. लाइलाहा इल्लल्लाहु
४. अल्लाहु अकबर

इन चारों कलिमों में अल्लाह की तारीफ़, पाकी, महानता, बड़ाई का बयान है। यह शब्द अपने आप में एक प्रकार की हम्द व शुक्र हैं। और उनके अदा करने से हम्द व शुक्र अदा होती है। यह कलिमें बहुत ही छोटे और हल्के फुल्के हैं। उनके अदा करने से अल्लाह तआला की सही तारीफ़, उसकी पूरी हम्द और उसका बहुत अधिक शुक्र अदा होता है। जिसने इनको पढ़ा मानो उसके अल्लाह की सारी हम्द व ख़ूबियां बयान कर दीं।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 08 AUGUST 2018 VOLUME: 10

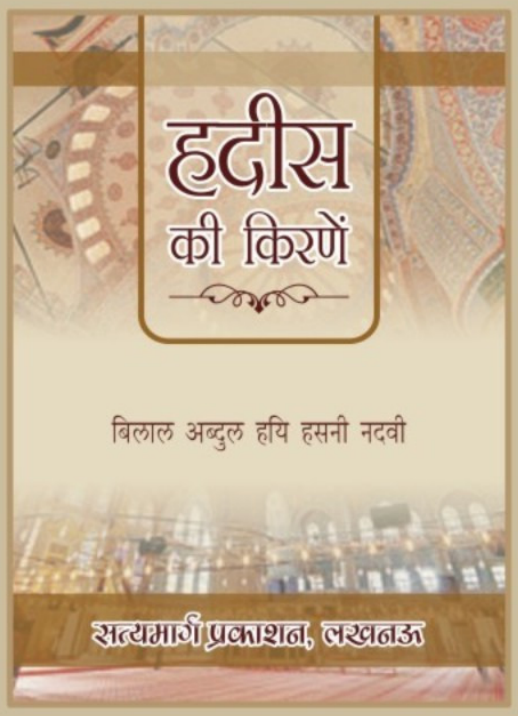

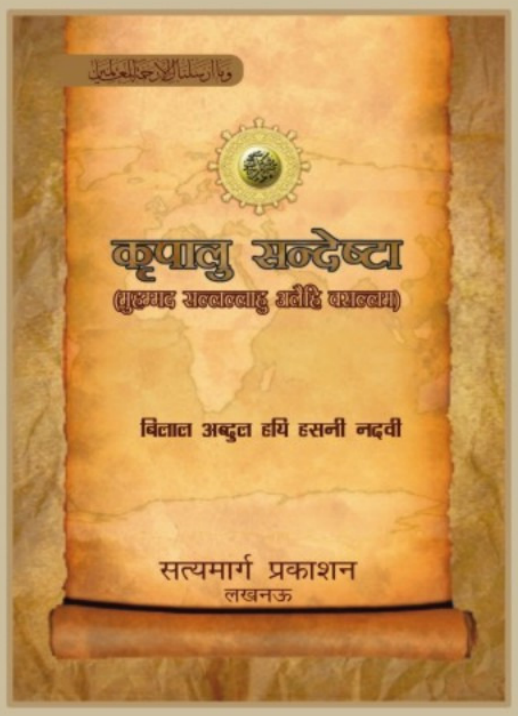

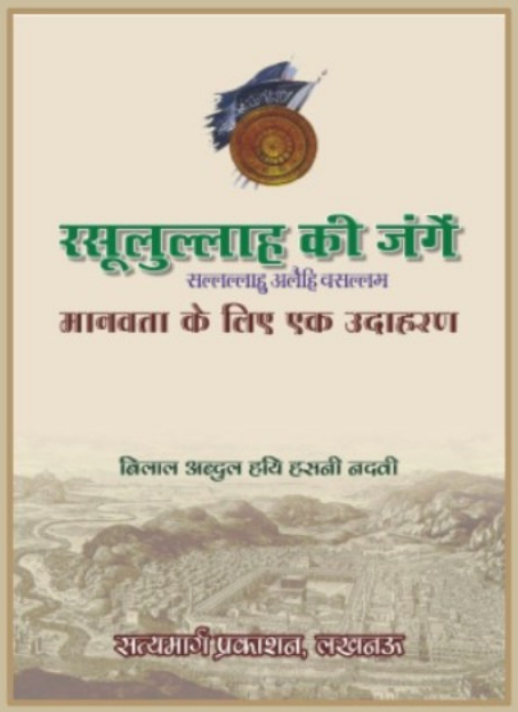

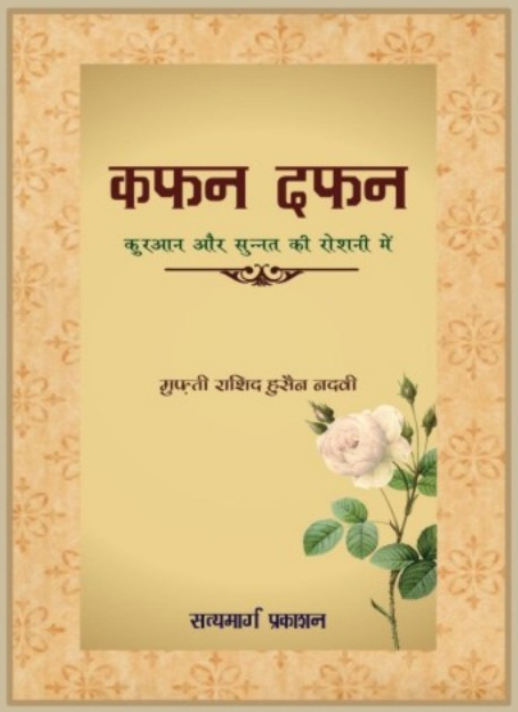

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.